सभाविलास।



आगरा मतबअ़ बल्देव प्रकाश में बए
हतमाम् लाला बल्देव प्रशाद के छपी
सन १८९६ ई०

श्रीगणेशायनमः

सभाबिलास

सोरठा

बिघन हरण गण मूषक बाहन गज वदन ॥ १ ॥
गणि पति चरण मनाय नवै काज कछु कीजिये

दोहा

आनन भावन स्वाद इमि परो गह्यौ सु मलिन्द ॥ कृष्ण चरण अरि बिन्द को पियत सदा मकरन्द २ ममता भ्रमता के मिटे उपजे समता ज्ञान। रमे जो रमता रामसों यमता गहै न मान ३ साधि सक्यौ ननु साधु संग लाय न सक्यौ समाध ॥ विषय विषाद उपाधि तज्ज हरि पल आध अराध ४ निगमरु गीता ने कह्यौ परम पुनीता नाम। वीत्यो जन्म जु जात है भजले सीता राम ५ मन की मिटे मलीनता होय लीनता साथ। नीकी यही प्रवीनता भजिये दीना नाथ ६ जिन पायो हरि रस परम मिटे भरम मय दोय। गह्यौ धर्म अप कर्म तजि मान परम गति होय ७ सुख कारण तारण तरण वारण लयो उवार। कंस पछारन मान हरि निरधारण आधार ८॥ काम क्रोध लागी सुरत वहै अभागी जान ॥ हरि अनुरागी जासु मति सो बड़ भागी मान ९ सुख दायक भायक भगत उपजायक आनन्द लीन लोक नायक जपो अघ नायक ब्रज चन्द १० पैरी पद निरब्बान की येहै ज्ञान की गाथ।

❋

आज्ञा वेद पुराण की जपैं जानकी नाथ २१ जपै गणेश सुरेश से औ महेश सुख आप ॥ आनंद देश कि देश में ह्रषी केश के जाप २२ घने बाज गज राज हैं सुख के सने समाज । बने ठने कि ह काज हैं जो न हेत ब्रज राज २३ उपजा वन आनन्द उर प-तिन सु पावन राम । आवन जावन जात मिट जप वामन को नाम २४ जौलो घट में स्वास हैं होय रह्यो हरि दास । पूरे आस निरास की वासदेव उर वास २५ मान मुराड माली कह्यौ नरक कुराड नहिं जाय ॥ कोट गराड पापी तरे मुराड रोक गुण गाय ॥ २६ ॥

अथ दृष्टान्त

भाव सरस समुझत सबै भले लगे यह भाय ॥ जैसे औसर की कही बानी सुनत सुहाय २७ नीकी पै फीकी लगे बिन औसर की बात ॥ जैसे बरणत युद्ध में रस सिंगार न सुहात । १८ फीकी पै नीकी लगै कहिये समय बिचार । सब के मन हर्षित करै ज्यों बिवाह में गार १९ जाही ते कछु पाइये करि ये ताकी आस ॥ रीते सरवर पै गये कैसे बुझत प्यास २० स्वाति बूंद है सघन में चातक मरत प्यास । जो जाही को है रहै सो ति ह पूरे आस २१ भले बुरे सब एक से जोलों बोलत नाहिं जान पर त हैं काक पिक ऋतु बसंत के मांहि २२ मधुर वचन ते जात मिट उत्तम जन अभिमान । तनक शीत जल सों मिटे जैसे दूध उफान २३ सबै सहायक सबल के कोइ न निबल सहा-हाय । पवन जगावत आग को दीपहि देत बुझाय २४ कछु बसाय नहिं सबल सों करे निबल सो जोर । चले न अचल उ-खार तरु डारत पवन झकोर २५ जो जाही से रचि रह्यौ तेहि

ताही सों काम ॥ जैसे फिरवा श्राक को कहा करै वस आम ॥
२६ मकुत मिले मन मिलत हैं अनमिल ते न मिलाय ॥ दूध
ही ते जमत है काजी ते फट जाय पर घर कवहूं न जाइवे गये
घटत है जोति ॥ रवि मंडल में जात शशि छीत कला छबि हो
न होत ५८ ब्रह्म वनाये वन रहे ते फिर और वनैने ॥ कान क
हत नहिं वैल जो जीभ सुनत नहिं बैन २८ मूरख गुरा समझै
नहीं तीन गुणी में चूक । कहा भयौ दिन को विभव देखै जो न
उलूक ३० मूढ़ नहीं ही मानिये जहां न पंडित होय ॥ दीपक की
रवि वा उदय वात न बूझै कोय ३१ निपट अबुध समझै कहा
बुध जन बचन बिलास ॥ कवहूं भेष न जानहीं अमल कमल
के जो वास ३२ सांच झूठ निर्णय करै नीति निपुण जो होय ॥ रा-
ज हंस बिन को करै क्षीर नीर को दोय ३३ दोषहि को उमहे गहे
गुण न गहे खल लोक ॥ पियै रुधिर पै ना पियै लगी पयाधर जोंक ३४ कारज धीरे होत है काहे होत अधीर ॥ समय पार तरबर
फैर केतिक सींचो नीर ३५ क्यों कीजे ऐसो यतन जाते काज न —
होय । परवत पै खोद कुआ कैसे निकसे तोय ३६ जो चाहै सोई
करै वड़े असंकित अंग । सब के देखत नगन हर धरत गौरि अर्द्धं
ग ३७ वड़े सहज ही वात सों रीझ देत वकसीस । तुलसी दल ते
विष्णु ज्यों आक धतूरे ईश ५८ सुधरी विगरी बेगही विगरी —
फिर सुधरै न । दूध फटे कांजी परे सो फिर दूध बनैन ३९ छोटे
नर ते रहत हैं शोभा युत सिर ताज । निर गल राखै चांदनी जैसे
पायन्दाज ४० सहज रसीलो होय सो करै श्रहित पर हेत ॥ जैसे
पीड़ित कीजिये इख तऊ रस देत ४१ कवहूं कुसङ्ग न कीजि
किये प्रकृति की हानि । गूगे को समझायवो गूगे की गति श्रानि
४२ कहा करे कोऊ यतन प्रकृति और की श्रोर ॥ बिष मारे ज्या-

बै सुधा उपजाहि एकहि ठौर ४३ डरे न काहू दुष्ट सों जाहि प्रेम की
वान। भवर न छोड़े केतकी तीखे कटक जान ४४ धन बाढ़े मन व
ढ़ गयो नाहिंन मन घट होय। जो जल संग वाढ़े जलज जल घट
घटे न सोय ४५ सबते लघु है मांगबो यामें फेर न सार वलि पै या
चतही भये बानन कर करतार ४६ सबै एकसे होत नहिं होत स
वन में फेर। कपरा खादी बाफ़ती लोह्र तवा सम शेर ४७ जैसे
की सेवा करे तैसी आशा पूर। रतना कर सैवे रतन सर सेवे शा-
लूर ४८ होत ससङ्गत सहज सुख दुख कुसंङ्ग के थान। गंधी-
आर लुहार की वैठ देख दूकान ४९ ठौर कुटेते मीत हू है अमीत
स तरात।। रवि जल उखैरे कमल को गारत जारत जात ५० जात गु
नी जातन तहां आडम्बर युत सोय।। पहुंचे चङ्ग अकाश लों जो गु
न संयुत होय ५१ गुन वारो सम्पति लहे लहे न गुन विन कोय
काढे नीर पताल ते जो गुन युत घट होय ५२ अरि छोटी गिनिये
नहीं जाते होत विगार।। तृन समूह को छिनक में जारत तनक
अगार ५३ पंडित जन को श्रम मरम जानत जे मति धीर।। कव
हू वांझ न जानहीं तन प्रसूत की पीर ५४ वीर पराक्रम ना करे
तासों डरत न कोय।। वालक हू की चित्र के वाघ खिलौना होय
५५ नृप प्रताप तें देश में रहे दुष्ट नहिं कोय। प्रकटे तेज दिनेश
की तहां तिमिर नहिं होय ५६ कारज ताही को सरे करे जो सम
निहार।। कवहूं न हारे खेल जो खेले दाव विचार ५७ कोऊ दूर
कर सके उलटि विध के अंक। उदधि पिता तउ चन्द्र को धोय न
सक्यो कलंक ५८ गाहक सबै सपूत के सारे काज सपूत।। सब को
मन होत है जैसे वन को सूत ५९ करत अभ्यास के जड़ मति हो-
सुजान। रसरी आवत जात ते सिल पर परत निशान ६० को सु-
का दुख देत है देत कर्म्म झक झोर। उरझे सुरझे आपही ध्वजा

पवन के जोर ६१ भली करत लागे विलंब विलंब न बुरे विचा
भवन बनावत दिन लगें ढाहत लगे न वार ६२ सोई अपनों आ
नों रहै निरन्तर साथ ॥ होत पराये आपनें शस्त्र पराये हाथ ।
६३ कहू रस में कहू रोस में अरि सों जिन पतियाय ॥ जैसे शीत
ल तप्त जल डारत आगिन बुझाय ६४ अंनर उगरी चार को सांच
झूठ में होय ॥ सब मानें देखी कही सुनी न माने कोय ६५ होय
भले के सुत बुरो भलो बुरे के होय ॥ दीपक सों काजल प्रकट क
मल कीच में जोय ६६ होय भले चाकरन ते भलो धनी को काम
ज्यों अंगद हनूमान ने सीता पाई राम ६७ सुख सज्जन के मिल
न को दुर्जन मिले जनाय ॥ जाने ऊख मिठास को जब मुख नी
च चवाय ६८ जाय मिले सुख होत है तिह बिछुरे दुख होय ॥ र
वी उदय फूले कमल ताबिन सकुचे सोय ६९ झूठे हूं करिये यत
न कारज बिगरे नांहि ॥ कपट पुरुष धन खेत पर देखत मृग फि
जाहि ७० कारज सोई सुधरि है जो करिये सम भाय ॥ अति ब
रसे बिना ज्यों करषन कुम्हिलाय ७१ रहै प्रजा धन यत्न सों र
हवाकी नर वार ॥ सो फल कोऊ न ले सके जहां करीला डार ७
पण्डित अरु वनिता लता शोभित आश्रम पाय ॥ है मानि
बहु मोल को हेम जटित छवि छाय ७३ अपनी प्रभुता को स
बोलत झूठ बनाय ॥ वेश्या वरष घटावही योगी वरष बढा
कांहू कहूं गुण दोष ते उपजत दुख शरीर ॥ मधुरी बानी बोल
परत पींजरा पीर ७५ भले बुरे निबहे सबै महत पुरुष के सं
॥ चन्द्र सर्प जल अग्नि ये बसत शंभु के अंग ७६ बिना कहे
सत पुरुष परकी पूरे आश ॥ कौन कहत है सूर्य्य को घर घर
रन प्रकाश ७७ कछु कहि नीच न छेडिये भलो न वाको संग ।
घर डारे कीच मे उछलि बिगारे अंग ७८ मीठी खाटी वस्तु न

मीठो जाकी चाह ॥ अमिली मिसरी खांड़ के आपु खात सराह
७८ खाय न खरचै सुद्ध मन चोर सकल ले जाय ॥ पीछें ज्यों म-
धु मक्षिका हाथ मलै पछताय ८० उत्तम विद्या लीजिये यदपि
नीच पै होय। परो अपावन ठौर में कञ्चन तजत न कोय ८१ आ-
न बूझ अजुगत करै तासौं कहा बसाय। जागतही सोवत रहै
ताको कहा जगाय ८२ सजन बचावै कष्ट सो रहै निरन्तर साथ
नैंन सहाई ज्यों पलक देह सहाई हाथ ८३ अरि के कर में दीजि
ये अवसर को अधिकार। ज्योंज्यों द्रव्य लुटाइ है त्यों त्यों यश
विस्तार ८४ वुद्दिवान गंभीर को संगत लागत नाहिं। ज्यों च-
न्दन ढिग आहि रहत बिष न होय तिह मांहि ८५ सज्जन को
दुख हू दिये दुरजन पूरे आस ॥ जैसे चन्दन को घिसे सुन्दर दे-
त सुवास ८६ सज्जन चित कबहू न धरत दुर्जन जन के बोल ॥
पाहन मारे आम को तउ फल देत अमोल ८७ विरले नर पंडित
गुनी विरले बूझन हार ॥ दुख खराडन विरले पुरुष जे उतम सं-
सार ८८ जे करतार बड़े किये मग पग धरत विचार ॥ दुर्जन हूंसों
मिल चलैं बोलै रोस निवार ८९ जाहि बड़ाई चाहिये तजै न उ-
त्तम साथ ॥ ज्यों पलास संग पान के पहुंचे राजा हाथ ॥ ९० ॥
वचन पारखी होहि तू पहिले आप न भाख ॥ अन पूछे नहिं भा-
खिये यही सीख जिय राखि ९१ मुख श्रवण दृग नासिका सब-
ही के एक ठौर ॥ कहवौ सुनिवो देखिवो चतुरन को कछु और ९२
एक कामिन अरु कवि वचन दोऊ रस को ठौर ॥ बेधक को मन वे-
धही वे कामिन कवि और ९३ जो तू चाहे अधिक रस सीख ईख
पै लेय ॥ जो तो सो अन रस करै ताहि अधिक रस देय ९४ नर-
की अरु नल नीर की गति एकै कर जोय ॥ ज्यों ज्यों नीचौ है चलै
त्यों त्यों ऊंचौ होय ॥ ९५ ॥

अथ परवानों

कैसे निबहै निवल ज़ोन करि सवलन सों गेर ॥ जैसे वस साग
विषय करत मगर सों बेर ९६ अपनी पहुंच विचार के करत
करिये दौर ॥ तेते पांव पसारिये जेती लांबी सौर ९७ पिशुन न
त्यों नर सुजन सों करत विस्वास न चूक ॥ जैसे दाह्यो दूध को
पीवत छाछहि फूंक ॥ फेर न ह्वैहै कपट सों जो कीजे व्यापार ॥
जैसे हांडी काठ की चढ़ै न दूजी वार ९९ करिये सुख को होत
ख यह कहु कौन सयान ॥ वा सोने को जारिये जासों फाटै का
१०० भरे बुरे जहं एक से तहां न वसिये जाय ॥ जों अन्याय पु
में विकै खर गुड़ एकै साय १०१ भाव भाव की सिद्धि है भा
भाव में भेव ॥ जो मानै तो देव है नहीं भीत को लेव १०२ अनि
अनीत लहिये न धन जो प्यारे मन होय ॥ पाये सोने की छुरी
पेट न मारे कोय १०३ मूरख को पोथी दई वाचन का गुण ग
थ जैसे निरमल आरसी दई आंधरे हाथ १०४ अति हठ मत
कर हठ वढै वात न करिहै कोय ॥ ज्यों ज्यों भीजै कामरी त्यो
त्यों भारी होय १०५ लालचहू ऐसो भलो जासू पूजै आस ॥ च
टनहू कहूं ओस के बुझत काहू की प्यास १०६ जैसे गुरा दी
दई तसो रूप निवंध ॥ ये दोऊ कहं पाइये सोनों और सुगन्ध
१०७ प्रेम निवाहन कठिन है समझ कीजियो कोय ॥ भंग भख
न है सुगन पै लहर कठिन ही होय १०८ एक वस्तु गुण हो
है भिन्न प्रकृति के भाय ॥ भटा एक को पित करै करत एक को
वाय १०९ विन स्वारथ कैसे सहै कोउ करि वे वैन ॥ लात खा
चुप करिये जु होय दुधारू धेन ११० करै बुराई सुख चहै कैसे
कोय ॥ रोपै पेड़ बबूल को आम कहां ते होय १११ होय बुराई

बुरो यह कीन्हों निर्धार ॥ खांड खनेगो ओर को ताको कूप तयार
११२ एक भेष के आसरे जाति वरण छिप जात । ज्यों हाथी के पाँ
व में सब को पांव समात ११३ कनक न जोरे मन जुरे खाते निर
वे सोय ॥ बूंद बूंद सों घट भरे टपकत वीते तोय ११४ श्रम ही-
सों सब मिलत है विन श्रम मिले न काहि ॥ सीधी अंगुरी घी
जमे क्यों हू निकरे नाहि ११५ होत न कारज मो विना यहै क-
है सो अयान । जहां न कुक्कट शब्द तहं होत न कहो विहान ॥
११६ यही बात सबही कहै राजा करे सो न्याव । ज्यों चौपर के
खेल में पासा परे सो दाव ११७ परको अव गुण देखिये अपनी
दृषि न होय ॥ करे उजेरो दीप पै तरे अंधेरो जोय ११८ अपनी
अपनी ठौर पर सब को लागे दाव ॥ जल में गाढ़ी नाव पर थल
गाड़ी पर नाव ११९ सुख दिखाय दुख दीजिये खल सों लरिये
काहि ॥ जो गुर दीन्हे ही मरत क्यों विष दीजै ताहि १२० मन
पूछे ही जानिये मूढ देख मन माहि । छलके आछे नीर घट
पूर छलके नाहिं १२१ विन सत वार न लागही ओछे जन की प्री-
ति अम्बर डम्बर सांझ के ज्यों बालू की भीति १२२ कुल सपूत
जान्यों परे खल सब लक्षण गात होनहार विन वान के होत
चीकने पात १२३ जो धन वन्त सुदेय कछु देय कहा धन हीन
कहा निचोरे नग्न जल न्हाय सरोवर नीर १२४ होत निवाहत
आपनों लीन्हे फिरे समाज । चूहा विल न समात है पूछ बांध
ये छाज १२५ विना प्रयोजन भूलहू ठठिये नाहीं ठाठ ॥ आनों
लहिं जा नगर को ताकी पूछ न वाट १२६ इंगत औ आकार
आकार ते जान लेत जो भेद ॥ तासों बात दुरै नहीं ज्यों दाई सों
पेट १२७ आप कहै नाहिन करै दाता को है हेत ॥ आप न आवै
मासरे औरन को सिख देत १२८ जो कहिये सो कीजिये पहि-

ले कर निरधार॥ पानी घर घर पूछनों नाहक भलो विचार १२९
पाछे कारज कीजिये पहिले यतन विचार। बड़े कहत हैं बांधि
ये पानी पहले पार १३० ठीक किये विन और की बात सांच तम
थर्प॥ हाथ अंधेरी रैन में परी जेवरी सर्प १३१ झूठ विना फीकी
लगे अधिक झूठ दुख भौन॥ झूठ तितोही बोलिये ज्यों आटे में
नोन १३२ डौर देखके हूजिये कुटिल सरल गति आप॥ बाहर
टेढौ फिरत है बामी सूधा सांप १३३ दोऊ चाहैं मिलन को तौ मि
लाप निरधारि॥ कबहूं नाहिन बाजिहै एक हाथ ते तारि १३४
आपै कारज आपनो करत कुसंगत साथ। पाय कुल्हाड़ी देत है
मूरख अपने हाथ १३५ ताही को करिये यतन रहिये जाकी आर
कौन बैठ के डार पर काटै सोई डार १३६ पर तछ नीके देखिये क
हु बरनै कोउ नाहि॥ कर कंकन को आरसी को देखत है चाहि॥
१३७ आये आदर ना करै जात रहे पछताय॥ आयो नागन पू-
जिये बांबी पूजन जाय १३८ निबल सबल के पक्ष ते सबलन सों
अनखात। देत हिमायन को गधी ऐराकी के लात १३९ बहुत द्र-
व्य संचय जहां चोर राज भय होय। कांसे ऊपर बीजुली परत क
हत सब कोय १४० ओछे नर के पेट में रहे न मोटी बात॥ आ-
ध सेर के पाव में कैसे सेर समात १४१ तरसे हू परसे नहीं नौढा
रहत उदास॥ जो सर सूखा भादवें किसी उन्हाले आस १४२
हिलन मिलन चितवन मिटी वय बीते करतूत। योगी यासो
उठगया आसन रही भभूत १४३ मिलन चले आये बहुरि न उ
न रही तिय चिन्त॥ कांधे डाली कामली योगी का के मिन्त॥
१४४ तज के सुन्दर चतुर पिय विरहे भनत बसाय॥ कूकर
चौके चढ़ाइये चाकी चाटन जाय १४५ निरखि प्रात पिय
सौति सब रही प्रीति हिन हार। लेय परोसन झां पड़ी नित उ

ठ करती रार १४६ वय रति मति गति चाह। विन पिय रिऊ वन
की वाक। धोवी वेटा चांद सा सीठी और पटाक १४७ रूठ्यौ पि
य सौतिन मिल्यौ सखिहि खिजत कर भानना वस चलत कु-
म्हार सो खरके मेंठति कान १४८ पिय चितवन पठई सखी
रही वैठ सुख लेय॥ चारों कुतिया मिल भई पहरौ काको देय॥
१४९ सव सुखंद पिय हित करै नऊ नर हतय नीति॥ भुसऊपर
को लीपनों अरु वालू की भींति १५० पिय औरे चितवन चलन
वर तिय सों नाहिं लेस॥ जैसे कंथा घर रहे तैसे गये विदेश १५१
वय वीते आये रमन अव न लहत चित चाव॥ वीत्यौ व्याह कु-
म्हार कौ भाडा लैलै जाय १५२ पीव परोसिन सों रहित तियन
कहत डर काज। अपनी जांघ उघारिये आपहि मरिये लाज॥
१५३ सौतिन कोउ वन में गनी पिय तें भयो वियोग॥ जिय घर
जितो वधावनों तिहि घर तितनों सोग १५४ तिय वैठी मन स-
कुच के पिय आये नाहि चाय॥ सूने घर को पाहुनों ज्यो आवै
त्यों जाय १५५ सुख विलसै जोवन समय फिर पछतावत वा-
ल॥ गई वास वोदार को रही खाल की खाल १५६ सौति लरी-
पिय पै गई वहे रह्यौ रिस पाग॥ घरकी दागी वन गई वन में
लागी आग १५७ पाय पलोटत है तिया है तिय सो वन साथ।
इक है है अरु चौकनी पुनि लाजू दोऊ हाथ १५८ पिय आये
जोवन वितै वहुरो चले विदेश। दोनों खोई जांगना मुद्रा अरु
आवेश १५९ अद्भुत हित प्रीतिम प्रिया सौतिन जानत सार॥
काजर सव कोउ देत है चितवन मांह विचार १६० नौढा प्रौढा
सों कहत हौं जानत रस घात। कूआ मे की मेंढकी कहै समुद्र
की वात १६१ सौति आज टोना कियो हौं न कहौंगी साय॥ ह
मतो हुरयो प्यार में को काहि वैरी होय १६२ सौति वात मीठी

कहत नऊ सौति ससरान॥ सोगा हांसू भ्र पढे अन्न बिलाई खाय
१६३ आलि लई संग टहल को करन लगी रस रास॥ गहर आनी
ऊन की वैठी चरै कपास १६४ सौनि प्रीनि जोरन रहै दुल्हन दे-
न उठाय। आयौ वादे जेवरी पाछै वकरी खाय १६५ जौवन लौ
तिय रस रमी वीते भयो वियोग॥ कोल्हू सों खल उतरी भई
पतीत योग १६६ मान मनाये विन कहत आव खल हंस बो-
ल। वनिक द्वारे वैठन नदे ऊक कोसौ तेल १६७ नोंढा सो प्रति
रति करी मोन कहत चाव॥ गोजा में कै थाव को पाजाने के रा-
व १६८ अधिक मान तें तिय तजो पिय न मिले हित जोड़॥
वनजारे की आग ज्यों गयौ वलेती छोड़ १६९ सुच नायक सु
च तिय रमै असुच न हिये समाय॥ कै हंसा मोती चुगै कै लं
घन रह जाय १७० कवहूं न रस कै कुच गहे रिस के गहे न कें-
श॥ जैसे कंथा घर रहे तैसे गये विदेश॥ १७१॥

अथ प्रेम

भूल लंग मदरा पिये सब काहू सुध होय॥ प्रेम सुधारस
जिन पियो तिन न रहे सुध कोय १७२ अद्भुत पैंडो प्रेम कोन्य
य कहत सब कोय॥ नयनन सों नयना मिलै घाव करेजे होय
१७३ जे घट विरह अवा आगिन पर पक भये सुनाय॥ तिन
ही घट में नंद भनि प्रेम अमी ठैराय १७४ जब चिछुरत तब हो
त दुख मिलिके छिंयो सिराय॥ याही में रस है भये प्रेम क-
हो क्यों जाय १७५ जब लग मन के वीच कछु स्वारथ को रस
होय॥ शुद्ध सुधा कैसे कहे परे वीच में नोय १७६ मन मतंग
मद रस मत्यो धस्यौ प्रेम रस धाय॥ लोक वेद कुल कान को
दई सैन विचलाय १७७ नीको विरह समीप ते जामें मिलन
की आस॥ कहिये भलो संयोग क्या जानें विछुरन वास १७८

प्रीति न टूटे अन मिलें उतम मनकी लाग ॥ सो युग पानी में रहैं मिटै न चक मकआग ॥ १७९ ॥

अथ नेत्र

अमी हलाहल मद भरे खेत श्याम रतनार ॥ जियत मरत झुक झुक परत जेहि चितवत एक बार १८० दौरत काहू औरके थके न कोऊ और । मेरे द्रग पै थक रहे देखत पिय द्रग दौर ॥ १८१ प्यारो द्रग अंजन दिये यहै लूक जन होय ॥ आय हिये मन ले गई देख सक्यो नंहि कोय १८२ नयन सलोने अधर मधु कह रहीम घट कौन । मीठा भावै लोन पर मीठे हू पर लोन १८३ मन राखों हौं वरजि कें जिय राखौं समझाय ॥ नय ना वरजे ना रहैं मिले अगाऊ जाय १८४ जव वरजत तब ना रहै गये प्रेम रस लैन । अप बस तें पर वस भये ये विसवासी नयन १८५ खल न लगत है एक पल छिन न घटत घटसांस ॥ साहस मन जब तें चुभी नयन सैन की फांस १८६ समझाये समझत नहीं पलक देत नहिं चैन ॥ नीर भरे प्यासे रहैं निपट अनोखे नैंन १८७ पिय मूरत चित लायके अब रोवै यह नैंन ॥ वैरी आग लगायकें दौरे पानी लेन १८८ प्यारे नयनन की कथन कैसे कहों कवित । खिनक साह खिन चोरटा खिन वैरी खिन वैन १८९ अनयारे तीखे कुटिल अकुंस से द्रग वान लागत सीधे आयकें पाछे खैंचे प्रान १९० प्रीतम नैनन में गिरी जिन नैनन की सैन ॥ फिर काढ़न को चाहिये वड़े तीखे नैंन १९१ लटपट पग धरनी फिरे अटपट बोलत बैन ॥ कछु पियसों खटपट भई सु टप टप टपकत नैन १९२ पान झरते हुमि कहै सुन तरवर वन राय ॥ अबके बिछुरे कब मिलें दूर पैसो जाय १९३ आलम ऐसी प्रीत कर ज्यों वारिज हित वारि

वह सूखे वह ना रहे मिटै मूल दलडार १९४ प्रीति जो सीखो ई
ख सों जहां जो रस की खान। जहां गाठ तह रस नहीं यही प्रीति
की वान १९५ वल्लरियां कुल वतियां नेहा ना चूकंत॥ जित्ये
कंठ विलग्गियां तित्येही सूखंत॥ १९६ प्रीति जो ऐसी कीजिये
ज्यों निशा चंदा हेत॥ शशि विन निशा है सावरी निशा विन च
न्दा खेत १९७ विपत बरावर सुख नहीं जो थोरे दिन होय। इष्ट
मित्र बन्धू जितै जान परैं सब कोय १९८ नेह निवाहन है क-
ठिन फिरौ जगन सब जोय॥ मिलन प्रीति नहिं देखिये स्वार
थ लग सब कोय १९९ प्रीति प्रीति सब कोउ कहै कठन तासु
तासु की रीति। आदि अंत निवहे नहीं वारू की सी भीति २००
सहस वार डुवकी लई मुक्ता करहि न लाग। सागर को कि हद्दो
प है बुरे हमारे भाग॥ २०१॥ वाला निकसी तीर जब नीर चुवन
वर वीर। मानों असवर रोवती तन विछुरन की पीर २०२ अलि
का वल संदोषये गोरे मुख की लोय॥ ज्यों रूखन में चांदनी
झिल मिल झिल मिले होय॥ २०३॥ मुक्ता तिय कान में कागुन
सदा कपाय॥ तिरछी चितवन ते डरै मन फिर वेध्यो जाय॥
२०४ ऐसा वलि हियरे सखी ना हिन ऐरी नाहिं॥ श्याम ध्यान
हिरदय वसे ताकी है परछाहिं २०५ चुम्बन समय जु नासिका
वेसर मुनिय डुलाय॥ अधर चुरावन पीय पै मानों हाहा खा-
य २०६ तिल चारा मानिय सलिल अलक फन्द वलचार।
मन पक्षी गहि गहि किने डोरे श्रवन पिढार २०७ गुंजा ऐ-
सी हो रहे मुक्ता वेसर वाल। नयन ओर के श्याम सव अ
धर ओर के लाल २०८ जबते मो ऊपर पड़ी श्याम सलोनी
जोति॥ लौनी लागे भीति ज्यों देह दूवरी होत २०९ गोरे
मुख पर श्याम तिल ऐन्च लियो जिय मोर। नेही कैसे म

व रहे पड़े चांदनी चोर २१० फेंटा चले छुड़ाय के निवल जानि
पिय मोहि॥ मनकी लगन छुड़ाय हो तो वल वदीहों तोहिं २११
गवन समय फेंटा गह्यौ सुंदर हित जिय जान॥ छूटतही दोऊ
छूटे उत फेंटा इत मान २१२ गौन समय फेंटी गह्यो छाड़ जु क
ह्यौ सुजान॥ पीउ प्यारे कहौ तुम फेंटा तजों के मान २१३ आ-
ज सखी हम इम सुन्यों पहु फाटन पिय गौन॥ पहु अरु हियेर
दोयहैं पहिले फाटै कौन २१४ वाला प्रथम वियोगनी घरही घर
पूछंत॥ वलस पयाने ऐ सखी वल याहू वाढंत २१५ विरह घ-
टा कोंधा सुरत क्षण क्षण कोंधत आहि॥ नयन नीर वरषा ल
गी गरजन आहि कराहि २१६ सूनो भवन विदेश पिय उससि
सांस तियलेत॥ मूरनि आवे ध्यान में उठि उठि आदर देत २१७
आज द्वैज विदेश पिय शशी निकस्यौ यह ओर॥ मम नयना अ
रु पीय के आय भये इकठौर २१८ उन विनु सव ऋतु फिर गई
देख दिनन के फेर॥ जेठ भिजोई आंसुअन सावन जारी घेर॥
२१९ प्रीतम तुम्हरे दर्श को रह्यौ अधर जिय आय। अब कह
अज्ञा होत है रहे कि फिर घट जाय २२० मोमन मनसा इस हु-
ती जन्म न छाड़ों पाय॥ विछुरन अंक जो विध लिखे तासों कहा
वसाय २२१ मुख ग्रीषम पावस नयन जिय माहिया जड़ काल॥
पिय विन तन ते तीन ऋतु कवहूं न मिटत जमाल २२२ जव
लग हिय में धर सकी तव लग धरौ जु धीर॥ मीरन अव के-
सी वनी जु अधिक विरानी पीर २२३ मन वहलावत दिन ग-
यौ महा कठिन है रैनि॥ कहा करौं कैसे मरौं विन देखें नाहिं चै
न २२४ खिन वैठे खिन उठ चले खिन खिन ठाड़ी होय॥ घायल
सी घूमत फिरे मरम न जाने कोय २२५ साहस तन मन ज्ञान
गुरा सवै गये पिय संग॥ चितवन दामिन सो गिरी मरम कि-

यो जिन अंग २२६ विरही लोगन में रहत तिय विन नीर गभीर।
मीन रहत सव नीर में इन मीनन में नीर २२७ तेरे विरह समु
में हीं जहाज़ भई कंत ॥ तन मन योवन डूवियो प्रेम ध्वजा फ
हरंत २२८ रोम रोम बूंदें चुवें लोग प्रस्वेद कहत्त ॥ सजनी सज
वियोग ते सव तन रुदन करंत २२९ पिय विछुरत विछुरे सबै त
के सुख चैन ॥ घर वाहर न सुहात कछु तलफ़ कटै दिन रैन २३
सम्मन इक दिन वे हते विच न सुहाते हार। वायु जो कोऊ पि
र गई अव विच परे पहार २३१ काल कूट ते कठिन है जो व्यापै
उह लाल ॥ यम मेरे आवै नहीं विरह काल को काल २३२ तन
ख मन दुख नयन दुख हिये भई दुख खान ॥ मानो कवहु ना ।
तो या सुख सों पहिचान २३३ रूप सयानप चातुरी सवै गई ि
य साथ ॥ देखो सखी जु रह गई एक वौरई हाथ २३४ हौं सजन
जानत नहीं पिय विछुरन की सार ॥ जिय विछुरन ते कठिन है ि
य विछुरन की वार २३५ हौं सजनी जानत नही विछुरी भूले भा
य ॥ अवकी वेर जु फिर मिलौं जन्म न छोड़ों पाय २३६ अहम
द गनि अवतार की कहत सवै संसार ॥ विछुरे मानस फिर मि
ले यही जान अवतार २३७ विरह तपन अति ही कठिन जानत
है सव कोय ॥ देख सखी या आग को जरि के शीतल होय २३
विरह दई पन घट गई तपन न नेकु सिरात ॥ भरे घरे सिर गाग
री रीती है है जाय २३९ नीरन विछुरत ही पिया उलट गयो
सार ॥ चंदन चंदा चांदनी भये जरावन हार २४० तुम विन एते
को करे कृपा जु मेरे नाथ ॥ मोहि अकेली जानिके दुख राख्यौ
है साथ २४१ नीरन प्यारे अस कह्यौ सपने देखो मोहि ॥ तुम
विन नींद न आवही कैसे देखों तोहि २४२ प्यारे मेरे नीद के
वान तिहारे हाथ ॥ आवत हे तुम साथही गई तिहारे सा

२४३ एकहू दुख निवेरउ नहीं दूजो पहुंच्यौ आय ॥ हियो कहौं के पुल कहौं दुख की किधौ सराय २४४ कहो कोरो परग ट नहीं लागत तोसों घात। प्यारे सपने मांऊ में मेरी तेरी वात। २४५ प्रीतम प्यारे के विरह नागिन सी यह रैन। लम्बी कारी विषभरी देख भज्यो है चैन २४६ घरी पहरसी पहर दिन दिन आपहर समान। छिन २ दूवरि विन मिले मोहि विहारी आन २४७ लाल पिया के विछुरत विछुर गये सव चैन। भूख प्यास नीद्रा गई उर्द्ध वायु भये नयन २४८ जव लग चल मारग पिया आव नकी ओसेर। तव लग हिय में हे सखी हांसनि के भये ढेर ॥ २४९ प्रीतम तुम गुन वेलरी पसरी मो उर नाहिं ॥ नेहनीरसों नि तवढे क्योंहूं सूखत नाहिं २५० प्रीतम को संदेश एक कहत हियो रु धियाय। मूधे वात न आवही योंही कहियो जाय ॥ २५१ ॥ प्रीतम को पतिया लिखो लिखत लिखी भर ताव ॥ वामें और कछू नहीं के हाहा के आव २५२ कर कांपत पतियां लिख- त जल भरि आवत नैन ॥ कोरो कागद हाथ दै सुखही कहिये वैन २५३ कागद भीजत नयन जल कर कांपत मसि लेत। पापी विरहा मन वसत विथा लिखन नहिं देत २५४ तुम विछुरत छिन में मरौ कहा जियौं विन तोहि ॥ तुम मूरत मामन वसे वही जियावत मोहि २५५ लिखन पढन कोहि नहीं कही सुनी नहिं जात। अपने जिय ते जानियो मे- रे मनकी वात २५६ इह गुन पतियां ना लिखो धरे रहो मन मौन। तुम प्रीतम जिय में वसो पाती वाचे कौन २५७ पातियां ताहि पठाइये जो साजन परदेश। निशदिन हिरदे में वसे ताको कहा संदेश २५८ वायस राह भुजंग हर लिखत तु तिया ततकाल। लिखि लिखि पांछत फिर लिखत कारन कौन-

जमाल २५९ प्रीतम तुम मति ज्ञानयों भयो दूर की वास ॥ देह खेह कित हूं रहै प्राण तिहारे पास २६० मन माला तुम नाम की ज़पत रहौं दिन रैन ॥ नयन पियासे दरश के नेक न पावें चैन २६१ वासर भूषण नींद निश चित चिन्ता पिय तोरि । लोयन गंग तरंग गति उठत हिलोरि हिलोरि ॥ २६२ । पाती लिखन संदेश तहं जहां न पहुंचे आप ॥ प्रीति लुक जन अंजि के करियै मीन मिलाप २६३ मन चाहत है मिलन को मुख देखन को नैन । श्रवण जो चाहत हैं सुनन पिय प्यारे के बैन २६४ कर कमलन पाती लिखो प्यारी चतुर सुजान ॥ इक इक अक्षर पै सखी वारों तन मन प्रान २६५ मेरो मन तो पै रह्यो तेरो मन मो मांहि ॥ दोऊ व्याकुल विन मिले चैन शरीर ह नाहिं २६६ तेरो मेरो एक मन दिखियत दोय शरीर ॥ वान जो मारे काम इक होत इहुन को पीर २६७ मसि लेखन कागद नहीं समाचार है मौन ॥ अव हम तुम एकै भये लिखै कौन को कौन २६८ नाद शब्द में वस कियो मास वेच धन लेहु ॥ मृग छाला पर गाड़यो यह मांगो मुहिं देहु २६९ मृगई चित इ मृगा तन लगे अहेरी घान ॥ मिल नर सोई एवेर चला न इन के गात २७० दधिसुत अवला अधर पर सोभात लटकंन । मानो भुजा सिकंदरी पंथी मने करन्त २७१ तन समदू मन लहर हे रूप कहर दरियाव ॥ मानों भुजा सिकन्दरी पंथी यहान आव ॥ २७२ ॥

सोरठा

बुध विद्या गुण ज्ञान नेम चाव अरु हर्ष वल ॥ ॥
ऐवजि होहिं अयान जिह घट विरहा संचेरे २७३

अथ तुलसी कृत

अपने अपने कर थपै लिख पूजन तिय भीत। सुफल फलै मन कामना तुलसी प्रेम प्रतीत २७४ तुलसी जहां विवेक नहिं तहां न कीजे बास॥ स्वेत २ सब एक से करर कपूर कपास २७५ एक नाम आराधबो तुलसी वृथा न जाय॥ लरकाई कौ पैरबौ आगे होत सहाय २७६ जिमि पनिहारी जेवरी खेंचत कटै पाषान॥ तुलसी रसना राम कहु पाप किनक अनुमान॥ २७७ तुलसी रसना तौ भली जो तू सुमिरै राम॥ नातौ काढि निकासिये मुख में भलौ न राम २७८ तुलसी विलस न कीजिये भज लीजे रघुबीर॥ तन तरकस ते जात है स्वास सरीखे तीर २७९ एकै साधे सब सधै सब साधे सब जाय॥ जो गहि सैवे मूलकौ फूले फलै अघाय २८० स्वारथ सीता राम है परमारथ सिया राम॥ तुलसी तेरौ दूसरे द्वार कहा है काम २८१ स्वारथ परमारथ सुलभ सकल एकही ओर। द्वार दूसरे दीनता उचित न तुलसी तोर २८२ तुलसी सोई चतुरता राम चरण लौ लीन॥ पर धन पर मन हरन को बेश्या बडी प्रवीन २८३ चतुराई चूल्हे परै तानी जम के घाय॥ तुलसी राम सो प्रेम नाहि सो जर मूल नसाय २८४ मोर २ सब कोउ कहत तू को कह निज नाम॥ कै चुप साधे सुनि समझि कैं तुलसी भज राम २८५ तुलसी अपने राम को रीझ भजो कै खीज॥ खेत परे ते जामि हैं उलटे सीधे बीज॥ २८६ सी कहते सुख उपजि है ता कहते न मनास॥ तुलसी सीता जो कहत राम न छाड़त पास॥ २८७ तुलसी अघ सब दूर गेरा अक्षर के लेत॥ फिर तेरे आवे नहीं मा अक्षर पट देत॥ २८८ आप आपने को अधिक जिह विध साता राम॥ तुलसी ताके पग तरे मेरे तन को चाम २८९ तुलसी जो पै राम

सों नाहिन सहज सनेह ॥ मूड़ मुड़ायो सो वृथा भाड़ भये तजि गेह २८० मूड़ उघारन किन कह्यो वरज रहे प्रय लोग ॥ घरही सती कहावती जरती नाहिं वियोग २८१ यथा लाभ संतोष सुख रघुपति चरण सनेह। तुलसी जो मन हाय है जस कानन तस गेह २८२ प्रीति राम भज नीति पथ चले राग रस जीति ॥ तुलसी सन्तन के मते यही भक्ति की रीति २८३ तुलसी खोटे दास को रघुपति राखत मान। ज्यों मूरख उपरोहितहि देय दान यजमान २८४ काहू के धन धाम हैं काहू के परिवार ॥ तुलसी ऐसे दीन के सीताराम अधार २८५ नहिं सेवा नहिं बुद्धि वल नहिं विद्या नहिं दाम ॥ तुलसी पतित पतंवा की तू पति राखें राम २८६ एक भरोसे राम के किये पास भर मोढ ॥ जैसे नारि कुनारि को वड़ी खसम की ओट २८७ तुलसी छल वल छांड़ि के करिये राम सनेह। अंतर कह भरतार सों जिन देखी सव देह २८८ सव देखे परखे लखे वहुत कहे कह होय ॥ तुलसी सीता राम अपनों नाही कोय २८९ हैं अधीन यांचे नहीं शीस नाय नहिं लेय ॥ तुलसी मानों या चकहि विन रघुवर को देय ३०० गंगा यमुना सरस्वती सात समुद्र भर पूर तुलसी चातक के मते विन स्वाती सव धूर ३०१ एक भरोसे एक वल एक आस विस्वास। स्वाति बूंद रघुनाथ हैं चातक तुलसी दास ३०२ ज्यों कामी के चित्त मे वढी रहत नित वान। ऐसे हो कव लागि हो तुलसी के मन राम ३०३ ज्यों गरीब के देह में माघ पूस पूस को घाम। ऐसे हो कव लागि हो तुलसी के मन राम ३०४ तीन टूंक कोपीन के अरु भाजी विन लौन। तुलसी रघुवर उर वसे इन्द्र वापुरो कौन। ३०५ गुण स्वरूप वल द्रव्य का प्रीति करै सव कोय।

तुलसी प्रीति सराहिये जो इन ते वाहर होय ३०६ मीन काट
जा धोइये खाये अधिक प्यास। तुलसी प्रीति सराहिये मुये
मुये मीन की आस ३०७ कहा कहौं छवि आज की भले वने हो
नाथ॥ तुलसी मस्तक तव नवै धनुष वान लो हाथ॥ ३०८॥ मुर-
ली मुकट दुराय के नाथ भये रघुनाथ॥ तुलसी लखि रुचि
दास की धनुष वान लियौ हाथ ३०९ पशु गढ़ं ते नर भयौ भू
ले सींग अरु पूंछ॥ तुलसी हरि की भक्ति विन धृक डाढी अरु-
मूंछ ३१० प्रभुता को सव कोउ चहै प्रभु को चहै न कोय॥ जो-
तुलसी प्रभु को चहै आपहि प्रभुता होइ ३११ तुलसी घर के
घेर में घरी घरी तन छीन॥ कवहूं ना वन वन फिरे कर कर वा-
को पीन ३१२ घर के घूमर घेर में राम चरण लो लीन॥ तुलसी
ऐसे सन्त को कह कर वा कोपीन ३१३ काम क्रोध मध लोभ की
जव लग मन में खान॥ तव लग पण्डित मूरखो तुलसी एक समा
न ३१४ तुलसी या जग आय के कौन भयो समरत्थ। इक कंचन
अरु कुचन को किन न पसारे हत्थ ३१५ मन राखत वैराग में घर
में राखत रांड। तुलसी किर वा नीम को चाख्यौ चाहत खांड॥
जव लग अंकुश सीस पर तव लग निर्मल देह॥ तुलसी अंकुश
वाहिरे सिर पर डारत खेह ३१७ तुलसी काया खेत है मनसा भ
यौ किसान। पाप पुराय दोउ वीज है वुवै सु लुनै निदान ३१८॥
एक घड़ी आधी घड़ी आधी हूं में आध॥ तुलसी सङ्गत साधु
की हरे पराई अपराध ३१९ स्वामी तें सेवक वढ़ौ जो निज ध
र्म समाज॥ राम वांध उतरे जलधि कूदि गये हनुमान ३२० स्वा
मी को सेवक घने सेवक को प्रभु एक॥ तुलसी दो में सो वड़ो-
जाके मन में टेक ३२१ तुलसी मन का मुकर है लखे सु लच्छ-
ण कोय॥ जैसा जाको भाव है तैसा देखा सोय ३२२ होत भले

के अनभलो होत दानि के सूम। होत कपूत सपूत के ज्यों पाव-
क महं धूम ३२३ नीच निचाई ना तजै साधनहू के संग। तुल
सी चंदन बिटप वस विन विष भौन भुवंग ३२४ आसन दृढ सु
मत ज्ञान दृढ होय॥ तुलसी विना उपासना विन दूल्है की जो
य ३२५ तन सुखाय पिंजर करै धरै रैन दिन ध्यान॥ तुलसी मि
टै न वासना विना विचारं ज्ञान ३२६ आवतही हरषै नहीं नय-
नन नहीं सनेह। तुलसी तहां न जाइयो कंचन वेष मेह ३२७
हरष उठै आदर करै आवत जान अतीत॥ तुलसी तवही जा-
निये परमेश्वर सों प्रीति ३२८ तुलसी या संसार में भांति भा-
ति जे लोग॥ हिलिये मिलिये प्रेम सों नदी नाव संयोग॥३२९॥
तुलसी विलम न कीजिये मिलिये सब सों धाय॥ को जाने किह
भेष में नारायण मिलजाय ३३० तुलसी कहत पुकार के सुनो
सकल दै कान॥ हेम दान गज दान ते वडो दान सनमान ३३१॥
पर सुख सम्पति देखि सुन जरहिं ते जड़ विन आग॥ तुलसी
तिनके भाग ते चलै भलाई भाग ३३२ तुलसी कवहूं न त्यागि-
ये अपने कुल की रीति॥ लायक हीं सों कीजिये व्याह वैर अ
प्रीति ३३३ ज्ञान गरीवी हरि भजन कोमल वचन अदोष॥तु-
लसी कवहूं न छोड़िये क्षमा शील संतोष ३३४ तुलसी सुपु-
रुष सेइये जव तव आवै काम॥ लंक विभीषण को दई बड़े
दुर्चित में राम ३३५ तुलसी निज कीरति चहै परकी कीरत
खाय॥ तिन के मुख मासि लागहै मिटै न मरिहै धोय॥३३६
आवत ही हरखै नहीं नयनन नहीं सनेह॥ तुलसी तहां न जा
इये कंचन वरषे मेह ३२७ हरष उठै आदर करै आवत जान
अतीत तुलसी तवही जानिये परमेश्वर सों प्रीति ३२८ तु
लसी या संसार में भांति जे लोग॥ हिलिये मिलिया प्रेम सों

वैर सनेह सयान तुलसी जो नहिं जान ।। सो किमि प्रेम मग पद धरे पथ बिन पूछ बखान ३४० तुलसी चरण जल कूप को निरधन निपट निकाज ।। के राखे कै संग चलै बांह गहि की लाज ३४१ लिख लिख लिख सब जग लिख्यो पढि पढि पढि कहू कौन ।। वढि वढि वढि घट घट गये तुलसी राम न चीन ।। ३४२

अथ श्लेष

पीत कचौरी है सखी पूरी परती बांहि । मन लड्डु आकरती फिरी विरह दही मन मांहि ३४३ कचौरी पिय रा सखी पकौरी पिय नांहि ।। बराबरी कैसे करौं पूरी पैरे कै नाहिं ३४४ अमिली बरषे होर ही पीपर पास न जाउ । जा मुनि भेद न पावहीं ता सों मैं अघि लाउ ३४५ करना फूल्यौ रे सखी सो पी विन क्या करना । जो प्रीतम करना गहे तो जी ले क्या करना ३४६ नारंगी हों पीव सों यह अनार पन मोहि । जो मैं पीवै सेवती सदा सदा फल होय ।। ३४७ तो ताकत निशा दिन रहै तुती निपट अजान लाल कहै सो कीजिये तज मैना की बात ३४८ सूख छुहारा तन भया गिरी परे नव देह । किस मिस लिखूं संदेशरा नीज लगो यह नेह ३४९ छूर छूही वरटाडु नहिं तवा टांकनी नाहिं ।। चौके गर्वी घारि वां रसन रसोई मांहि ३५० पालक लेने ही गई पिय सोया पाया । मेथी निपट अजान लाल में चूक जगाया ।। ३५१ ।।

सोरठा

कीकर पाकर तार । जामन फल सा आमिला
सेव कदम कचनार । पीपल रत्ती तून तज ।।

अथ प्रश्नोत्तर

कहा न अबला कर सकै कहा न सिंधु समाय। कहा न पावक में जरै काल काहि नहिं खाय। सुत नहिं अबला कर सकै मन नहिं सिंधु समाय। धर्म न पावक में जरै नाम काल नहिं खाय ३५४ प्रीतम या कलि काल में कहु ऐसे को आहि ॥ एक वस्तु जिय सौंपिये दे दश गुरा करि ताहि ३५५ सुनो अर्थ मन मोहनी है यह धरा सुभाइ ॥ बोये एकै वीज के दे दश गुण करि ताहि ३५६ ऐसो वह भख कौन है खात जो नाय अघाय। खात खान भोजन घटै तब आपहि मरजाय ३५७ वहु भख ज्वाला जानिये तृण लकड़ी वहु खाय। जव भोजन घट जात है तव सीरी है जाय ३५८ दृग मूंदे सव देखिये कौन मुकुर सो इठ। जो चख खोल निहारिये कछू न आवे दीठ ३५९ वह स्वप्न को मुकर है सोवत सव दिखराय॥ जागे कछु सूझै नहीं जव दृग है खुल जाय ३६० रहत भाकसी में सदा चिन्ता कछु न जनाय। रुदन करै छूटै नहीं जवे वाको नाम वताय ३६१ वालक वाको नाम है गर्भ भाकसी जाव॥ जव निकसै तव रोय है वाको यही वखान ३६२ तिय विगार नर सिर परै नर विगार सिर तीय। एच रांढी पूछिये कहौ सोच के तीय ३६३ भूमि विगारत स्वानिनी नाम स्वान को लेइ। हानि करै मंजार सो दोष मजारी देइ॥ ३६४ न्यारे न्यारे पुरुष है सकल होंहि इक ठाम। तव सव कोऊ कहत हैं नारी उनको नाम ३६५ मन के तव लों पुरुष हैं न्यारे न्यारे आहि। धागे सांहि पिरोइये माला कहिये ताहि ३६६ न्यारी न्यारी नारि हैं मिलें सो पुरुष न मांहि॥ तव सव के उ नर भाषिये नारी कहियत नाहिं ३६७ अस्व अस्वनि इक संग है जवहि कहत दल होय कहत सवै घोड़ा जुरे घोड़ी कहत न कोय॥ ३६८॥

अथ कुंडलियां

वैरी वधुआ वानिया ज्वारी चोर लवार ॥ व्यभचारी रोगी कृसी नगर नारि की यार। नगर नारि को यार भूल परतीत न कीजे सौसौ सौंहिं खाय चित एको नहिं दीजे। कहि गिरधर कवि राय घैरे आवे अन गैरी। हित की कहै वनाय जानियै पूरो वैरी। विना विचारै जो करै सो पाछे पछिताय ॥ काम विगारै आपनो जग में होत हंसाय ॥ जग में होय हंसाय चित में चैन न पावै ॥ खान पान सनमान राग रंग मनहि न आवै। कह० दुख कछु टरत न टरे खटकत है जिय माहि कियो जो विना विचारे ३७० वीती ताहि विसार दे आगे की सुधि लेय ॥ जो वनि आवे जहज में ताही में चित देय ॥ ताही में चित देय वात ज्याहीं वनि आवै ॥ दुर्जन हंसे न कोय चित्त में खेद न पावे॥ कह यही कर मन परतीती ॥ आगे को सुख होय समझ वीती सो वीती ३७१ साई ये न विरुद्धिये गुरु परिडत कव यार। वेटा वनिता पौरि यज्ञ करावन हार। यज्ञ करावन हार राज मंत्री जो होई ॥ विप्र परोसी वैद्य आपको तपे रसोई। कह० यहै कैसी समझाई। इन तेरह तें तरह दिये वनि आवे साई ३७२ साई अपने चित की भूल न कहियो कोय। तव लग मन में राखिये जव लग कारज होय। जव लग कारज होय भूल कव हूं नहिं कहिये। दुर्जन तातो होय आप सीरो है रहिये। कह० वात चतुरन के नाई। करतूती कहि देत आप कहिये नहि साई ॥ ३७३ ॥ चिन्ता ज्वाल शरीर वन दावा लागि लागि जाय प्रगट धुआं नहिं देखिये उर अन्तर धुधुवाय ॥ उर अन्तर धुंधआय जरे ज्यों कान्च की भट्टी। जरगी लोहू मांस रह

गई हाड़ की ठट्ठी। कह० सुनों हो मेरे मिला। वे नर केसे जियैं नाहि तन आपन न्दिन्ता ३७४ राजा के दर बार में जैये समयौ पाय। सांई तहां न पठाइ जहां कोउ देय पठाय। जहं कोउ देय उठाय बोल अन बोले रहिये। हसिये ना हहराय बात पूछे ते कहिये॥ कह० समय सों कीजे काजा। अति आतुर नहिं होय बहुरि अन खैहे राजा ३७५ कृत घन कबहु न मानही कोटन करो जो कोय॥ सर बस आगे राखिये तउ न अपनों होय। तऊ न अपनों होय भले की भली न मानै। काम काढ़ि चुप रहै फेर तिहि नाहि पिछानै। कह० रहत नित ही निर्भय मन। मित्र शत्रु सब एक दाम के लालच कृत घन ३७६ जाकी धन धरती लई ताहि न लीजे संग॥ जो संग राखै ही बनै तो करि राख अपंग। तो करि राख अपंग फेरि फर कैसा न कीजे कपट रूप बतराय ताहि को मन हर लीजे। कह० खटक जैहे नहिं ताकी॥ कोटि दिलासा देउ लई धन धरती जाकी ३७७ साई अपने भ्रात को कबहु न दीजे त्रास॥ पलक दूर नहिं कीजिये सदा राखिये पास। सदा राखिये पास त्रास कबहू नाहिं दीजै। त्रास दियो लंकेश ताशु की गति सुनि लीजै। कह० राम सों मिलियो आई। पाय विभीषण राज लंक पति बाज्यो साई ३७८ साई बेटा बाप के बिगरे भयो अकाज॥ हरना कुश और कंस को गयो दुहुन को राज। गयो दुहुन को राज बाप बेटा के बिगरे दुशमन दावादार भये महि मण्डल सगरे॥ कह० उन्हे काऊ न बताई। पिता पुत्र की रार लाभ एकौ नहिं साई ३७९ साई नदी समुद्र को मिली बढ़पनों जान। जानि नाश भयौ मिल नहीं मान महत की हानि मान महत की हानि कहो अब केसी कीजे॥ जल खारी

है ऐसो ताहि वाहु कैसे कीजै कह० कच्छु मच्छल सकुचाई
वही फजीयत चार भयौं न दियन को साईं ३८० साईं मन
अरु इन्द्रियगन इनको यही सुभाव खाल खिचावै आपनी प
रबंधन के दाव परबंधन के दाव खाल अपनी खिचवावै ॥
सुरगड कांटि कैं कुटिय तऊ पर बाज न आवै। कह० जेर अपनी
कुटिलाई॥ जलमें गिरि सड़ गये तऊ छोडी न खुटाई ३८१
साई समय न चूकिये यथा शक्ति अनुमान। कोजाने को
आय है तेरी पौरि प्रमान। तेरी पौरि प्रमान समय असम-
य तकि आवै। ताकौं तू मन खोल अंक भरि कंठ लगावै ॥
कह० सबै यामें सधि आई। शीतल जल फल फूल सम-
य जिन चूकौ साई ३८२ साई हरि ऐसी करी बलि के द्वारे
जाय। पहिले हाथ पसारि कै बहुर पसारे पाय। बहुरि प
सारे पाय मतो राजा नें बतायौ॥ भूमि सबै हरि लई बांधि
पाताल पठायौं। कह० राव राजन के ताईं। छल बल करि
पर भूमि लेन को नृपत्यौ साईं ३८३ साईं पुर पाला परयौ
आसमान ते आप। पंगहि अंधे छोडि कै पुरजन चले प
राय। पुरजन चले पराय अंध इक मतो विचारे॥ पंगु कंध
पै लियो दृष्टि वाकी पग धारे। कह०। मते है चलिये साईं
विना मते को राज गयौ रावण को साईं ३८४ सोना लेने पी
गये सूनी करि गये देश। सोना मिला न पी फिरे रूपा हो ग-
ये केश॥ रूपा हो गये केश रूप सब रोय गमायौ। घर बैठी
पछितायकंत अजहूं नहिं आयौ। कह० लोन बिन सबै अ
लोना। जब यौवन ढल जाय कहा लै करिये सोना॥ ३८५॥
मोती लेने पी गये खार समुन्दर तीर॥ मोती मिले न पी।
मिले नयनन टपकत नीर॥ नैनन टपकत नीर पीर अब-

कासों कहिये॥ बीते बारह मास पिया बिन घरही रहिये॥
कह० सांझ डारत सगुनौती। जर आवै वह सिंधु जहां उपजत
है मोती ३९६ हीरा अपनी खान को मनही मन पछिताय। गु
न कीमत जानी नहीं तहां बिकानो आय॥ तहां बिकानो आय
छेद कर हांसो बांध्यो॥ मीठी लगे न मास लौन बिन फूहर रा
ध्यो। कह० धरौ कैसे के धीरो। गुन कीमत घट गई यही कहि
रोयो हीरा ३९७ साईं अगर उजार में जरत महा पछताय। गुन
गाहक कोई नहीं जाहि सुवास सुहाय॥ जाय सुवास सुहा
य सुनै वन में कोउ नाहीं॥ कै गीदर कै हिरन सुनौ समझत क
छु नाहीं। कह० वड़ो दुख यहै गुसाईं॥ अगर आक की राख
भई एकै मिलि साईं ३९८ साईं हंस न आवही बिन सरवर
जल पास। निर फल तरवर ते डरै पंछी पथिक उदास। पंछी
पथिक उदास छांह विश्राम न पावै॥ जहां न प्रफुल्लित
कमल भमर तहं भूल न आवै॥ कह० जहां यह बूझ वडाई
तहां न करि सांझ प्रात ही चलिये साईं॥ ३९९॥ हंसा उड़
दिश को चले सरवर मीन जुहार॥ हम तुम कवहूं भेट हैं स
देशन व्यवहार। संदेशन व्यवहार भरयो पूरो जल रहियो
जीव जंतु चिर जियौ सदां उत्तम फल रहियो। कह० केल
को रही न मंसा॥ दै असीस उड़ि चल्यो देश अपने को हं
सा ३९० यह हंसा रहियो नहीं सरवर गयो सुखाय॥ जो रहि
है तो सीस पर वगुला दैहैं पाय॥ वगुला दैहैं पाय कीच कोरे
है जैहो॥ लोक हंसाई होय कहा कछु इज्जत पैहो। कह०॥
मोहि टूक येही संसा। याहू ते कछु घाट और ही है हे हंसा
३९१ सांई एकै गिर धरयो गिरधर गिरधर होय॥ हनूमान
बहु गिर धरयो गिरधर कह्यो न कोय॥ गिरधर कहन की

य हनू धौला गिर लायौ॥ नाकौ किनका टूट परे व सो कृष्ण
उठायौ। कह॰ वड़ेन की वड़ी वड़ाई। थोरे ही यश होय यशी
पुरुषन को साईं ३९२ नयना जव परवस परे उत्तम गुन स
जांय॥ वे फिर फिर सोरी करैं ये फिर फिर लिपटाय॥ ये
फिर फिर लिपटाय नेत्र वहरों भरि आवें॥ खान पान सुख
त्याग रात दिन ही दुख पावें॥ कह॰ सुनों तुम श्रवन नवना
लोग जु देय कलंक परे जव पर वस नेना ३९३ साईं सुमन
पलास पर सुआ रह्यौ जो आय। लाल कली सी चोंच पर
मधुकर वैठ्यौ जाय॥ मधुकर वैठ्यौ जाय सुआ ततकाल
पठायौ॥ कोट कष्ट दुख पाय मरौं कर छूटन पायौ। कह॰
वेग घर वजै वधाई॥ दीजै विदा पलास जियत घर जैये
साईं ३९४ साईं तेली तिलन सों कियौ नेह निर्वाह। छांटि
फटक उज्जल करै दई वड़ाई ताहि॥ दई वड़ाई ताहि पंच
यह सिगरे जानी दे कोल्हू में पेरि करी है इक तर घानी॥
कह॰ मया की यही वड़ाई। अमया सव ने भली मान मत
मेरी साईं ३९५ साईं सुआ प्रवीन अति वानी वदन प्रवित्र
रूपवंत गुण आगरौ राम नाम सों चित्त॥ राम नाम सों चि
त्त और देवन अनुराग्यौ॥ जहां जहां तू गयौ तहां तूनी को
लाग्यो। कह॰ सुआे चुक्यौ चतुराई॥ सेमल सेवे वृथा
विस्वास करि भूल्यौ साईं ३९६ धोखे दाड़िम के सुआ
दयौ नारियल खांस खन खाई पाई सज्ञा फिर लाग्यौ प
छितान॥ फिर लाग्यो पछतान वुद्धि अपनी को रोवें। निर्गु
नियन के पास वेठ गुन अपनों खोयो। कह॰ कहूं जैथ न-
हिं ओखे। चोन्च खटक्कै टूटि सुआ दाड़िम के धोखे॥ ३९७
गदहा थोरे दिनन में खूंद खाये इतरात॥ अफरान्यौं-

मारन कोंहे एराकी के लात॥ एराकी के लात देत संका नहिं
आने। एराकी साहि रहन ताहि कोऊ नहिं जानें। कहि। रहे-
गी कोलों दुवहा। एराकी की लात फेर कैसे सहे गदहा॥३९८
३९८ महुआ नित उठ दाख सों करत मसलहत दाख। हम
हम तुम सूखे एकसे हूजत हैं रस राय॥ हूजत हैं रस राय
विलग जनि याको मानों। मधुर मिष्ठ हम अधिक कछू जिन
जिय में जानों। कह० कहत साहव सों रहुआ॥ तुम नीची कु
ल वृक्ष हम ऊंचे महुआ ३९९ गुल तुर्रा सों जाय कें वाद करै
जो करील। हम तुम सूखे एकसे पूछ देखिये भील॥ पूछ
देखिये भील भेद जो जानें मेरो॥ तुह पूछ वुलवाय भेद जो
जावे तेरो॥ कह० नतर हौं करि हौं झर्रा। अव जिन भूल गुमा-
न करै फिर हो गुल तुर्रा ४०० वगुला झपटत वाज पै वाज रहे
सिर नाय॥ कुलहा दीने पग वंधे खोटे दे फहराय। खोटे दे
फहराय कहे जो जो मन आवे। कुलहा लै पग छोरि धनी वि
न कौन छुडावे। कह० अरे तू सुन खग वगुला। समयो पलटे
जान वाज पै झपटै वगुला ४०१ कौआ कहत मराल सों कौ
न जाति कौ गोत। तो सों वद रूपी महा कोउ न जग में होत॥
कोउ न जग में होत कुटिल मैले मल खाने। ऊसर वैठ मर्याद
भृष्ट आचार न जानें। कह० कहां ते आयौ हौआ धन्य हमा
रो देश जहां सज्जन जन कौआ ४०२ साईं घोडन के अछत
गदहन आयौ राज। कौआ लीजै हाथ में दूर कीजिये वाज।
दूर कीजिये वाज राज ऐसो ही आयौ। सिंह कैद में कियौ -
स्यार गजराज चढायो। कह० जहां यह वूझ वडाई॥ तहां न
कीजे सांझ सवारे हि चालिये साईं॥ ४०३॥ भौंरा ये दिन क-
ठिन हैं दुख सुख सहो शरीर। जव लैग फूलै केतकी तव लै-

ग विरम करील । नव लग विरम करील हरषे मन में नाहिं कीजै
जैसी वहै बयार पीठ नव तैसी दीजै। कह० होय जिन जिन में वीरा
सहै दुःख और सुख एक सज्जन अरु भौंरा ४०४ हिरना विरुझे
उ सिंह सों ओझर खुरी चलाय। जार रुख जी नो परयो सिंहा
गयो वराय। सिंहा गयो वराय समो सामर्थ्य विचार्यो॥ कुल
हि काल मालाय हस्यौ हंस के कहि हार्यौ। कह० मोहि या
ही वन फिरना आज गैर कर जांउ काल में हौं के हिरना ४०५
पानी वो बढ्यौ नाव में घर में वाढ्यौ दाम। दोऊ हाथ उलीचि
ये यही सयानों काम। यही सयानों काम नाम ईश्वर को ली
जै। पर स्वारथ के काम सीस आगे धर दीजै। कह० वड़ेन की
याही वानी। चालिये चाल सुचाल राखिये अपनो पानी ४०६
मैना जामो जीव की तोता की दिन रैन॥ वक वकरी के नाक हूं
मोर कहां ते चैन॥ मोर कहां ते चैन दुनियां में तीतर जानों।
गलि गलि आई वाज मौन नाहीं ते ठानों। कह० सुले कुरंग
के वैना। पिय गल डारी वांह हंसे मुख देखैं मैना ४०७ हुक्का
डार्यौ भेट में गहि लीनो नै हाथ॥ चले राह में जान हैं बांध
तमाकू साथ॥ वांधि तमाकू साथ गैल को धंधा भूल्यौ राह स
व चिंता दूर आग देखत मन फूल्यौ। कह० जु यम को आयो
रुक्का॥ जिव लै गया काल हाथ में रह गयो हुक्का ४०८॥

अथ वरवा

परि पद रुचिर तरनिया चढ़ मन मोर। तर भव सागर अवही र
हे दिन थोर १ मोहन के मुख सोहन जोगन जोग। रूप असन
अखियन को भस्म करोग २ ऊंच जाति ब्राह्मणि या वरनि
न जाय। दौर दौर पा लागी शीस छुड़ाय ३ वाड़ि २ आंख बरि
नियां हिय हरि लेय। पतरी के अस डांव करेजवा देय। ४॥

घाट बाट लै बानिन हाट बइठ। कहत काहु नहिं जानी बनि
यैन मीठ ५ नीक जात कुरसी की खुरपी हाथ। आपन खेत नि
रावै पी के साथ ६ अहि रिनि मनकी गहरी उत्तर न देय। नै-
ना कैर मथनियां मन मथ लेय ७ हलुआ अस हल बनिवा
लवा लाल ८ लाल हैं गुबना नैन रसाल ९ टेढ़ मांग नायन-
की नहरन हाथ। फिर पाछे जो हेरै मह नौ साथ ८ चीकन गा-
त नेलनियां बरनिन जाय। चितवन रूप अनूप द्रष्टु लपटा
य १० मैली एक धोबिनिया उजर गांव। भूली कन्त बिन रूलप-
ति लैलै नांव ११ झमक चली कसइनियां दे दे सैन। धरै करै ज-
वा छुरियां करि २ पैन १२ नीक जाति तुराकिन की बहुतै लाज
जानै पिय की सेवा और न काज १३ सुन्दर तरुन तमोलिन
तरबर कान॥ हेरै हंसे हेरै मन फेरै पान १४ भर भूजिन कन
भूजहि बैठि दुकान। फुटका करत बिहंसि के बिरही प्रान॥
१५ कल वारि मदं मानी काम कलोल। भरि भरि देत पयल-
वा महा ठठोल १६ परदवार तन नाज़ुक कैथिन नारि। संख ध
रे घूंघट दृग चली निहार १७ अचरज करत लुहरिया पी के-
पास। नाहि कुवत बिन जिय के लेय उसास १८ खेल फाग धन
बहुरी धुरि उड़ान। गावैं बालम वर वै ऋतु नियरान १९ नि
सदिन बसे हिरदवा मिलन न होय जिमि पानी के चंदहि
हुवै न कोय २० पात पात कर ढब्यौ सब बन बीन। घटहि
हुतु मो बालम परे न चीन २१ होय उपरिया रहि गई गिर
गई आग। घरकी पौरि बिसर गई गोहन लाग २२ बालम
सुरत बिसर गई कहत संदेश। एक पथिक न बहुरे क सब
ह देश २३ बालम हो मो बालम तुम कस कीन॥ लोग कुटं
ब धाम छाड़ स तुम मन दीन २४ बालम तुम तन चितवन

गागरि फूटि ॥ अचरा गो फहराय धरम गो छूटि ॥ २५ सूरजपै
शिर ऊपर कितहु न छांह ॥ ठाड़ी पतिहि निहारो कत मोरे
नाह २६ बालम की सुधि आवै यह गति मोर ॥ निकस नि
कस जिय पैठत ज्यों चकडोर २७ बिरहिनि ढूढनि बन
गई बाघ भिरान । बघवा सूंघ न खाइल बिरहिनि जान २८
नित उठि जांउ पनघटवा आवहु रोय । बालम की उनहरवा
दिखहुं न कोय २९ बोली आन कोयलिया मधुरी बान ॥ महु
वा रोवै ठाढ़ आम बौरान ३० प्रेम प्रीति को बिरवा चलेहु
लगाय ॥ सींचन की सुधि लीजो बिसर न जाय ३१ अस मन
होय बलम अब कबहु न जाय । रखिये रातहु दिवस हिर
दवा लाय ३२ पात पात कर लूटिस बिपन समाज । राज·
नाति यह कसि कस ऋतु राज ३३ चलत न सोच करसि
सखि सगुन सभाग । है ससुरार तुम्हारिहु घन बन बाग ॥
३४ करि बरन कोयलिया कुहुकति आन । अम्बा चढ़ि डरपा
वति पिय बिन जान ३५ भले भेट बालम सन भटकिहु आयू
धाय धाय बन खाय बेष नहिं जाय । बालम चलत न भेटे
छतियां लाय । सोई कसक करेजवा कसकति आय ३६ ॥
बदरन धरी धनुहिया करत अचेत । बुंदियन के करि बान
करेजवा देत ३७ ॥ नैना भीतर मितवा रहत जो गाढ़ निकस
त कबहुं न भेटिस अस मन गाढ़ ३८ हरद बरन मोरी देही
पियहि बियोग ॥ कौय बिथा मोहि बूझहु बाउर लोग ॥ ३९ ॥

अथ अरल

भज सूआ हर नामकि बैठा ताक में ॥ दिना चार का रंग मिलै
गा खाक में ॥ साहिब वेग संभार काल सों रार है । यम के हाथ
गुलेल फरक्का पार है १ यह दुनिया बाजीद पलक का·

पेखना॥ यामें बहुत बिकार कहो क्या देखना॥सबजीवनका
जीव जगत आधार है। परहां वाजीदा जो न भजै भगवंत छूटी
में छारहै २ दीदा दीपक बार महल में सोवते। नारीसे करि न
ह जगत मेंह जीवते। सोधा तेल लगाय पान मुख खाइगे। बि
ना भजन भगवान के मिथ्या जायगे ३ राम नामकी लूट फबै
है जीव को। निस वासर कर ध्यान सुमिर तू पीव को। यैहै बा
त फिर सिद्ध कहत सब गावरे। परहां वाजीदा अधम अज्ञा मि
लि तरे नारायण नावरे ४ गाफिल हूये जीव कहो न षों बनत हैं
या मानु षके सांस जु कोऊ गिनत हैं॥ जाय लेय हरि नामक
हां लौं सोय है। परहां वाजीदा चाकी के मुख पर्यो सु मैदा हो
यहै ५ आज सुनै कै काल कहत हौं तुझ को॥ भावै बैरी जान
जीव तू मुझ को। देखत अपनी दृष्टि खता क्यों खात है॥ पर
हां वाजीदा लोहे कै सो ताव जन्म यह जात है ६ केते अर्जुन
भीम ज़रा जसवंत से॥ केते गिने अशङ्क बली हनुमंत से
जिनकी सुन सुन हांक महा गिर फाटते॥ परहां वाजीदा
तिन घर खायौ काल जो इन्द्रहि डाटते ७ हौं जानौं कछु
मीठ अंत कह तीत है देख्यो हृदय बिचार देह यह अनी
त है पान फल रस भोग अंत कह रोग है॥ परहां वाजीदा
प्रीतम प्रभु के नाम बिना सब सोग है॥ ८॥ देख तमाशा
अजब जो लगी पतानतू होय॥ खड़ा निहंग पकड़ सूजा
नतू॥ लगा लुटावन आप आपना सर्व ज़र॥ परहां वाजी
दा कीन साहब नू अकवे यों नाहिं यों कर ९॥ बनिआदा सि
र ताज खंभदर गाहदा॥ सब नादा मखबूल रसूल खुदा
हदा॥ उम्मत देयुत जीवन उसदी जान भर॥ परहां वाजीदा
कौन साहब नू अकवे यों नाहिं यों कर॥ १०॥ बिना बास का

फूल न ताहि सराहिये। बहुत मित्र की नारि सो प्रीति न चाहि
ये॥ सठ साहिब की सेव कबहुं नदि कीजिये॥ परहा बाजीदा
विद्या बिद अरु जिन्द अकाज न दीजिये ११ राम राम कहत
कलमा न डूबा कोइरे॥ अर्द्ध नाम पाखान भरा निरलोइरे। क
र्मी कि केतिक बात बिलग है जांइगे॥ परहा बाजीदा हाथी के
असवार कुते क्यों खांइगे १२ कुंजर मन में मत मरै तौ मारिये
कामिनि कनक कलेस टरै तौ टारियै। हरिभक्तन सों नेह प
लै तौ पालियै॥ परहा बाजीदा राम भजन में देह गलै तौ गालि
ये १३ जेती बोली बानी से तौ बह रही॥ हृदय कपट की बात
तौ मुख सों का कही॥ बोले बोली बोल बुलाई पीउ की। परहा
बाजीदा ऊपर की सब झूंठ फलैगी जीव की १४ घड़ी घड़ी घ
ड़ियाल पुकारै कही है॥ बहुत गई है अवधि अल्प ही रही
है॥ सोवै कहा अचेत जाग जग पीउरे॥ परहा बाजीदा चली
है आज कि काल्ह बटाऊ जीव रे १५ जो जिय में कछु ज्ञान पक
रहु मन्न को॥ लिपट हि हरि को हेत सुजावत जन्न को॥ प्रीति
सहित दिन रैन राम मुख बोलई॥ परहा बाजीदा रोटी लिये
हाथ नाथ संग डोलई॥ १६॥ पानी संगे न ताहि तहां लो गो
यरे। रीते हाथन जाय जगत सब जोयरे॥ यह माया बाजी
दचलै क्या साथरे। बहते पानी बीर पखाली हाथरे १७ पाह
न को रार है बरसत मेह में॥ घाल धरी बाजीद दुष्टता देह में
डसै श्रोच का खाय झूंठ गहि रोइये॥ परहा बाजीदा सर्प
हि दूध पिलाय रयाही खोइये १८॥ बदन बिलोकित
नयन भई हों बावरी॥ धारे दंड बिभूत पगन द्वै पावरी॥ क
रजोगन का भेष सकल जग डोलिहों॥ परहा बाजीदा ऐ
सो मेरे नेम पीव पीउ बोलिहों १९ एकै नाम अनना क

हूं के लीजिये ॥ जन्मजन्म के पाप चुनौती दीजिये ॥ लेकर चिनगी आग धरै तू अव्वरे ॥ परहाबाजी दा कोठी भरी कपास जाय जल सव्वरे ॥ १० ॥

अथ छप्पै

तिलक भाल बन माल अधिक राजत रसाल छबि ॥ मोर मुकटकी लटक चटक बरनत अटकन कवि ॥ पीताम्बर फहरय मधुर मुसकाय कपोलन ॥ रच्यौ रुचिर मुख पान तान गावन मृदु बोलन ॥ रति कोटि काम अभिराम अनि दुष्ट निकंदन गिर धरन ॥ आनन्द कंद ब्रज चंद प्रभु सुजय जय जय अशरण शरण १ मोर मुकट नग जटित करण कुण्डल हेम झलकें ॥ मृग मद तिलक ललाट कमल लोचन दल पलकें ॥ घूंघर वारी अलक कौस्तुभ कंठ बिराजे ॥ पीत बसन बन माल मधुर मुरली धुनि बाजे ॥ करत कोटि आभा बरन सु चंद सूर्य देखन लजत ॥ ब्रह्म देव दे भक्त जन सु श्याम रूप प्रीतम सजत ॥ २ ॥ चतुरानन सम बुद्धि विदित जो होय कोट धर ॥ एक एक धर प्रति निसीस जो होय कोटि धर ॥ तीस सीस प्रति बदन कोटि करतार बनावै ॥ एक एक मुख माहि रसन फिर कोटि लगावै ॥ रसन रसन प्रति शारदा कोटि वेति वानी कहहिं ॥ महिजन अनाथ के नाथ की महिमा नवहुं न कहि सकहिं ३ भूमि परत अब नरन करत बालक बिनोद रस ॥ पुनि जोबन सस नव्व इन्दी अनेग बस ॥ बिषय हेतु जड़ फिरत बहुरि पहुच्यौ वृद्धापन गयो जन्म गन गनत अंत कछु भयो न आपन ॥ थिर रहत न कोउ नर पनि नवल रहत एक चहुं युग सुयश ॥ सोइ अमर अजर नर हर निरेष सोइ पियत भगवंत रस ४

विमल चित करि मित्र शत्रु छल बल बस किज्जिय ॥ प्रभु
सेवा बस करिय लोभ बतहि धन रज्जिय । युवति प्रेम बस
करिय साधु आदर बस आनिय ॥ महाराज गुन कथन बंधस
मरम मन मानिय ॥ गुरु नमत सीस रस सें रसिक विद्या ब-
लबुध मन हरिय ॥ मूरख बिनोद सु कथा बलन सुभ सुभा
व जग बस करिय ५ याचक लघु पट लहै काम तुर जो कलं-
क पद ॥ लोभी दुर्यश लहैं असन लालची लहै गद ॥ मूरख
औगुन लहै पढ पढ गुन पण्डत ॥ सूर सुरन यश लहै रहै
रनमें महि मण्डिनं ॥ निर्वान शुपद योगी लहै जौन गहै
नमता सुमति ॥ मुख भगत जतन जन लहै करे जु नो बि-
धि भक्ति प्रीति ६ धिक मंगन बिन गुनहि गुनहि धिक
सुनत नरझि ॥ रीझ धिक बिन मौज मौज धिक देत जो
खीजे ॥ देवो धिक विन सांच सांच धिक धर्म न भावै ॥ धर्म
सुधिक बिन दया दया धिक करि कह आवै ॥ अरि धिक
चित न सालई चित धिक जह न उदार मति । मति धिक
केशव ज्ञान बिन ज्ञान सुधिक बिन हरि भगति ७ न कछु
किया बिन बिमल कछु कायर जिय छत्री ॥ न कछु नीति
विन नृपति न कछु अक्षर विन मंत्री ॥ न कछु बांरा बिन
धाम न कछु गृह बिन गरुवाई ॥ न कछु कपटको हित न
कछु मुख आपबड़ाई ॥ न कछु दान मन मान विन न क
छु सु भोजन जासु दिन ॥ नर सुनो सकल मर हर कहत
न कछु जन्म हरि भक्त विन ॥ ८ ॥ यदपि कुमंग संग ला-
भ तदपि वह संग न किज्जिय ॥ यदपि धनक सोय लि
धन तदपि पट प्रकृति न लज्जिय ॥ यदपि रान नहिं
प्रानि तदपि मन मान न र खुहिय ॥ यदपि प्रीति ज्वर घटैं

तदपि मुखउघरन दुहिय॥ सुन सुयश दुवार कि वाड़ दे-
कुयश जमाल न मुक्ति ये दै तज हु जगत विन भवन भवन
तज त्रिय बिन कीनों॥ त्रिय तज जु न मुख देव मुखहि-
सम्पति हीनों॥ सम्पति तज विन दान दान तज जहं नाबि
प्रमानि॥ बिप्र तजहि बिन धर्म धर्म तजिये दिन भूपति न
ज भूप भूमि विन भूमि तज दीह दुर्ग विन जो बसै। तज दु-
र्ग सुकेशव दास कबि जहां न पूरन जल लसै १० मूढ़ तपी
सम कृती दुष्ट मानी गृहस्थ नर॥ नर नायक अति आल-
सी बिपुल धनवन्त कृपन कर॥ धर्मी दुष्ट सुभाव भेद पा-
ठी अधर्म रत॥ पराधीन गुनवन्त भूमि पालक बिदह स
त॥ रोगी दरिद्र पीड़ित पुरुष वृद्ध नारि नर गृह चित॥ ए
ते बिडंब संसार में इन सब को धिक्कार नित ११ तिय बल
जोवन समय साध बल शिव पद सव्वर॥ नृप वल तेज-
प्रताप दुष्ट बल व्रचन अडंबर॥ निद्धन बल सुमिलाप-
दान सेवा याचक बल॥ वानिज बल व्योपार ज्ञान बल बर
विवेक दल॥ द्रुम विद्या बिनय उदार बल गुन समूह प्रभु
बल दरब॥ परिवार सुसल सबिचार कर होहि एक सम्म
त सरब १२ नर पति मण्डन नीति पुरुष मण्डन मन धी
रज॥ पण्डित मंडन बिनय ताल रस मण्डन नीरज॥
कुल तिय मण्डन लाज बचन मण्डन प्रसन्न मुख॥ मति
मण्डन कबि कर्म्म साध मण्डन समाध सुख॥ भुज ब-
स मंण्डन समाध सुख॥ भुज बल मंण्डन क्षमा गृह प-
ति मंण्डन बिपुल धन। मंण्डन सिध रूप मंत काहि का
या मण्डन बल न धन १३ ज्ञान वंत छूट गेह निधन परि
वार बढ़ावै॥ बंधु आकरै गुमान धनी सेवक है धावै। परि

डत किरिया हीन रांड दुर्बुद्धि प्रवानै ।। बृद्ध समझ बधर्म नारि भर्तहि रिपु मानै ।। कुलवंत पुरुष कुल बिधि तजै बंधु न भानै बंधु हित ।। सन्यास सार धन संग्रहै ये जग में मूरख बिदित २४ गई भूमि फिर मिलै वेलि फिर जमै जरै ते। फल फूलन तें फलै फूल फूलंत जरै ते ।। केशव बिद्या निकट बिकट बिसरी फिर आवै ।। वहुरि होय धन धर्म गई सम्पति फिर पावै ।। होय जो शील सुशील मति जगत इत इमि गाइये ।। आंरा गये फिर मिलै पै पति न गई फिर पाइये २५ सर सर हंसन होत बाजि गजराज न दर दर ।। तरु तरु सुफल न होत नारि पतिव्रता न घर घर ।। तन तन सुमति न होत मोति जल बंद न घन घन ।। फन फन मनि नहि होत सर्व मलया नहिं बन बन ।। कहुं नर होंहि न सूर सब नर नर होत न भक्त हर ।। नरहर सुकबि कबित्त किय सर्व होंहि नाहि एकसर ।। २६ ।।

अथ पहेली

इक नारी अरु पुरुष हैं ढेर ।। सबसे मिलै एकही बेर ।। दिना चार का अंतर होय ।। लिपटे पुरुष छुड़ावै सोय ।। कंघी ।। पानी में निश दिन रहै जाके हाड़ न मांस ।। काम करै तरवार को फिर पानी में बास २ ।। कुम्हार का डोरा ।। जल में रहै कूंठ नहिं भाषै बसै सु नगर मझार ।। कच्छ मच्छ दादुर नहीं पण्डित करो बिचार ३ ।। घड़ी ।। सोने की वह नारि कहावै दाल चांवल के मोल बिकावै ४ ।। कचनी ।। श्याम बरन पहरि नहिं जटा धरे नहिं ईश ।। ना जानै पिय कौन है पंख लगाये शीश ५ ।। कसेरू ।। बूझत खर अरु आधौ नाम ।।

अर्थ करो के छांडो ग्राम ॥ ६ ॥ नीम ॥ जल कर उपजे जल में रहे ॥ आंखों देखा खुसरो कहे ॥ ७ ॥ काजल ॥ सीस जटा पोथी गहे स्वेत बसन गल मांहि ॥ योगी जगम है नहीं ब्राह्मण पै रिडत नाहिं ८ ॥ लहसन ॥ श्याम बरन पीताम्बर कांधे मुरलीधर नहिं होय ॥ बिन मुरली वह नाद करन है बिरला बूझै कोय ॥ ९ ॥ भौंरा ॥ कर बोले कर ही सुने श्रवण सुनहिं नहि ताह ॥ कहे पहेली बीरबल सुनिये अकबर शाह १० नाड़ी ॥ बांबी वांकी जल भरी ऊपर जारी आग ॥ जबै बजाई बांसुरी निकस्यो कारो नाग ॥ ११ ॥ हुक्का ॥ जाके रातन कोप फल पेडहि देय जलाय ॥ सो नर बर वहु फल्लियां देखो लागो आय ॥ १२ ॥ भोचम्या ॥ सीश केश बिन चुटिया तीन औगुन तेल पराये छीन ॥ जोइ जाय उनके दरबार ॥ ताके मूड़ न राखे बार १३ चिबेरी ॥ रात पड़े तब पड़ने लागी ॥ दिन की मरी रात को जागी ॥ उसका मोती नाम बताया ॥ बूझो मुम में कूक सुनाया ॥ १४ ॥ ओस ॥ नर नारी हम एकै दीठे ॥ ज्यौं ज्यों बोले त्यौं त्यौं मीठे ॥ एक न्हाय इक सेक न हारा ॥ कह खुसरौ नहिं कीच नगारा १५ नगारा ॥ श्याम बरन अरु सोहनी फूलन छाई पीठ ॥ सब पुरुषन के गल परत ऐसी लंगर ढीट १६ ॥ ढाल ॥ सिर पर सोहे गंग जल मुण्ड माल माहिं ॥ वाहन वाको वृखभ है शिब कहिये के नाहि ॥ १७ ॥ रहैंट रग रग इक पक्षी बना ॥ छोरी चोंच अरु कांट घना ॥ तीस तीस मिलि बिल में बसें ॥ जीवन ही अरु उड़ि के डसे ॥ १८ ॥ तीर ॥ देखी एक अनोखी नारि ॥ गुन उसमें इक सबसे भारि ॥ पढी नहीं अरु अचरज आवे ॥ मरना जीना तुरत बतावे १९ ॥ नाडी ॥ फारो पेट दरिद्री नाम ॥ उतम घर में वाको ठा

म।। श्रीको अनुज बिष्णु को सारौ। पंडित होय सो अर्थ बिचारो २०॥ शंख॥ नर के पट जो नारी बसै। पकड़ हिलावै खिल खिल हंसै। पट फाड़ जब नारी गिरी। मोकों लागी प्यारी खरी २१ गिरी। बारे से वह सब को भावे। बड़ा हुआ कछु काम न आवे। मैं कह दिया है उसका नाम। अर्थ करो के छांडो गाम २२। दीया। चहूं आर फिर आई। जिन देखा तिन खाई २३॥ खाई॥ आधी बूबु सारी रानी। अर्थ करो कोउ पण्डित ज्ञानी २४॥ बूरानी॥ नारी एक शहर में सोई। सभी बस्तु वाके घर होई॥ खाइ कछू नहिं पीवे पानी॥ लोग कहें यह खरी दिवानी २५॥ खारी। बाबरी॥ बिना बुलाई खरचै दाम। तन गोरी और अभरन श्याम। आवत ही पर वेश सिधारी॥ पहुंची जहां भई अति प्यारी। भरी गई रीती है आई॥ तब वह नारी पुरुष कहाई २६॥ हुण्डी॥ अरबी कहो तो पाई ना। फारसी कहो तो आई ना। हिन्दी कहत फारसी आवे॥ कहो पहेली कौन बतावे २७॥ दर्पन॥ आदि कटे ते सब कोउ पाले॥ मध्य कटे ते सब कोउ पारे। अंत कटे ते सब को मीठा॥ सो खुसरो में आंखों दीठा २८ काजल॥ पक्षी एक स्वेत और हरयो॥ निस दिन रहे बाग में परयो॥ ना कछु पीवे ना कछु खाय॥ अश्व बराबर दौरयो जाय २९॥ बकसुआ। एक नारि भोंरा सी काली। कान नहीं औ पहिरे बाली॥ नाक नहीं अरु सूंघै फूल। जितना अर्ज उतनाही तूल ३०॥ ढाल॥ एक नारि वह है बहुरंगी। घर से बाहर निकसे नंगी। उस नारी का यही सिंगार॥ सिर पर नथुनी मुंह पर वार ३१॥ तलवार॥ डा॥ देखा कीजे॥ ३२॥ चिक॥ हाथ में लीजे॥ देखा कीजे। ३३॥ दर्पन॥ एक नारि करतार बनाई। ना वह क्वारी ना वह ब्याही॥ सूहे रंग सदा सी रहै। भावी भावी सब जग कहै ३४

वीर बहूटी॥ आधा भक्तन मुख बसै आधा गुनियन साथ॥ वाहि पसारी देत है पुड़ी बांधकै हाथ ३५॥ हरताल॥ खेत मैं उपजै सब कोउ खाय। घर में होय तो घर बहि जाय ३६ फूट॥ लाग कहूं लागू नहीं बरजत लागे धाय॥ कही पहेली एक मैं दीजै चतुर बताय ३७॥ होंट॥ लक्ष्मी पति के कर बसै पांच अक्षर के मांहि। पहलो अक्षर छोड़ि कें सो दीजे तुम नाहिं॥ ३८ दर्शन। एक अचंभा देखो चल। सूखी लकड़ी लावै फल। जो कोई उस फल को खाय। पेड़ छोड़ वह अंत न जाय॥ ३९॥ बरछी॥ योगी एक मढी मैं सोवै॥ मद पीवै औरु मस्त न होवै। जब बालका कान में लागा। योगी छोड़ मढी को भागा ४०॥ गोला॥

अथ मुकरी

अर्द्ध निशा वह आयो भौन॥ सुंदरता बरनै कहि कौन॥ निरखत ही मन भयो अनंद। क्यों सखि सज्जन ना सखि चन्द १ घुल गई गांठ न खोले खुलै॥ जहां तहां मेरे संग डुलै॥ हिये बिराजत होय न भार। क्यों सखि सज्जन नहिं सखि हार २ हांसी ते मैं मोल मगायो। अंग अंग सब खोल दिखायो॥ वासों मेरो भयो जु मेल। क्यों सखि सज्जन ना सखि तेल ३ मैं अपनो मन दीन्हों सैन। सुन्दर रूप सुहावै वैन। ढिंग तें कबहुं न कारि हौं जूआ। क्यों सखि सज्जन ना सखि सूआ ४ वा बिन चित्त चहूं दिस डोलै॥ चातक ज्यों पुनि पुनि पिय बोलै॥ प्रलय होआवै नहिं गेह। क्यों सखि सज्जन ना सखि मेह ५॥ सोभा सदा बढ़ावन हारा॥ आंखन तें छिन होत न न्यारा। आठ पहर मेरो मन रंजन। क्यों सखि सज्जन ना सखि अंजन ६॥ रात दिना जाको है गवन॥ खुले द्वार आवे मेरे भवन॥ वाको हरष बताऊं कौन क्यों सखि सज्जन ना सखि पवन ७ बाट चलत मेरो अंचरा

गहै। मेरी सुनै न अपनी कहै। ना कछु मो सों झगरा झांटा। क्यों सखि सज्जन ना सखि कांटा ८। बाट चलत में पड़ा जो पाया। खोटा खरा नहीं परखाया। हाथ लगे तब होवै कैसा। क्यों सखि सज्जन ना सखि पैसा ९। देखन में वहु गांठ गठीला। चाखन में वह अधिक रसीला। मुख चूमौ तो रस का भांडा। क्यों सखि सज्जन ना सखि गाडा १०। सगरी रैन मेरे संग जाग्यो। भोर भये तें बिछुरन लाग्यो। वाके बिछुरत फाटे हिया। क्यों सखि सज्जन ना सखि दिया ११। छटे छमासे मो घर आवै। आप हिले अरु मोहि हिलावै। नाम लेत आवै मोहि शंका। क्यों सखि सज्जन ना सखि पंखा १२। निस दिन मेरे ऊपर रहै। दोऊ कुच लै गहै। उतरत कहै झकझोली। क्यों सखि सज्जन ना सखि चोली १३। मोकों तो हाथी कौ भावै। घट वढ होय तो नाहिं सुहावै। ढूंढ ढूंढ के ल्याई पूरा। क्यों सखि सज्जन ना सखि चूरा १४। सगरी रैन छाती पर राखा। उसका रस कस मैंने चाखा। भोर भया तब दिया उतार। क्यों सखि सज्जन ना सखि हार। १५। रितरंग मोहि लागत नीको। वा बिन सब जग लागत फीका। उतरत चढ़त मरोरत अंग। क्यों सखि सज्जन ना सखि भंग १६। लम्बी लम्बी डगों जु आवै। सारे दिन की हौंस बुझावै। उठ के चला तो पकड़ा खूंट। क्यों सखि सज्जन ना सखि ऊंट १७। दूर दूर करूं तो दौड़ा आवै। खन अंदर खन बाहर जावै। देहरी दौड़ कहीं नहीं सुना। क्यों सखि सज्जन ना सखि कुना १८। छोटा मोटा अधिक सुहाना। जो देखै सो होय दिवाना। कबहूं बाहर कबहूं अन्दर। क्यों सखि सज्जन ना सखि बन्दर १९। अति सुरंग है रंग रंगीलो। है गुनवन्त बहुत चटकीलो। राम भजन बिन कभी न सोता। क्यों सखि स-

ज्जन ना सखि तोता २० आठ पहर मेरे ढिंग रहे॥ मीठी प्यारी बातें कहे॥ श्याम बरन अरु राते नैना। क्यों सखि सज्जन ना सखि मैना २१॥ जब आवै तब जल भरि लावे॥ तन मन की सब तपन बुझावे॥ मन का भारी तन का छोटा। क्यों सखि सज्जन ना सखि लोटा २२ धमक चढ़ै सुध बुध बिसरावे॥ दाबत जांघ बहुत सुख पावे। अति बलवंत दिनन को थोड़ा क्यों सखि सज्जन ना सखि घोड़ा २३ अति सुंदर जग चाहत जाको। मैं भी देख भुलानी वाको। देखत रूप भयो जो टोना। क्यों सखि सज्जन ना सखि सोना २४ निस दिन आंगन ऊभो रहे छांह धूप सब ऊपर सहे॥ वाको देखे लगे न भूख। क्यों सखि सज्जन ना सखि रूख २५॥

अथ हिय हुलास

प्रथमें ताको सुमिरिये जिन्ह दीन्हो गुरु ज्ञान॥ ज्ञानी गुन गावें सदा ध्यानी धरें जु ध्यान १ अंबर थाम्यो थंभ बिन धरती अधर धराव। मनुष्य रूप है अबतस्यौ देखत कलि कौ भाव २ भावित तीनों लोक में नाहीं दूजो कोय। मन में जानिये होनी होय सो होय ३ अब कछु बरनों तीन रस रस ही जग को जीय। रसना रस की जस कहे सुनि सुख पावै हीय ४ हिय हुलास या ग्रंथ को राख्यो नाम बिचार॥ या में सिंगार राग के रचे रूप शृंगार ५ आदि नाद अनहद भयो ताते उपज्यो वेद। पुनि पायो वा वेद में सकल सृष्टि को भेद ६ प्रारापकौ षट राग सुनि तब उपज्यो वैराग। वारे तरु में रुद्द को ताते भावे राग ७ जग को धीरज राग है राग रूप की खान तन मंजन सो राग है राग प्रेम को प्रान ८ सुख को दाता राग है राग रूप को भोग। याही ते सब कहत हैं राग रंग से·

योग ई राग हरै ॥ सब रोग को राग च है रस भोग ॥ बिरही गहै जु संग को उपजे मह्वा बियोग ॥ १० ॥

अथ राग रागनी नाम

भैरों की धुनि भैर वी बंगाली बैरारि ॥ मधु माधवी अरु सिंधवी पांचौ बिरहिन नारि ११ टोडी गौरी गुन कली खम्बावति को कब्ब ॥ मालकोस की रागनी गावत अति दुर्लब्ब १२ राम कली पट मंजरी और कहो देसाख। ये नारी हिंडोल की लालित बिलावल राग १३ देसी नट अरु कान्हड़ा केदारा कामो दादीपक की प्यारी सबै मह्वा प्रेम पर मोद १४ धना सिरी आसावरी मारू बहुरि बसंत ॥ सिरी राग की रागनी माल सिरी है संत ॥ भौ पाली अरु गूजरी देशी कार मलार तनक बियोगिनि कामिनी मेघ राग की नार १६ ॥

अथ राग गुन बरनन

भैरों सुर सुरता कहै कोल्हू चलेजु धाय। माल कोस तब जानिये पाहन पघलब जाय १७ चले हिंडोलो आप ते सुनत हिंडोल ॥ बरपै जब घन धार अति मेघ राग के बोल १८ सिरी राग के सुर सुनै सूखो रूक्ष हराय ॥ दीपक दीपक बर उठे कोऊ जानै गाय १९ ॥ अथ राग अलाप समय

पहले पहर निस समय भैरों राग बखान। काम कोस तब गाइये जब लग निकसै भान २० एक पहर दिन चढ़े तक कहयो राग हिंडोल। ठीक दुपहरी के समय दीपक के सुर बोल २१ सिरी राग चौथे पहर जब लौं दिन अधियाय। मेघ राग जब ही भलो जबै मेघ बर साय २२ फागुन में ये राग सब जागत आठौ याम ॥ अष्ट याम में निश समय एक धाम बिश्राम २३ ॥

अथ राग की ऋतु बरनन

भैरों सवद कौशिक सिसिर और हिंडोल बसन्त। दीपक ग्रीषम हैम औ मेघ सुपावस अंत॥२४॥

अथ बाजे बर्णन

जग मैं सब सुर ना कहैं बाजे साढ़े तीन॥ खाल नार अरु फूंक पुनि अद्ध नाल सुर हीन २५ खाल नगारो ढोल ढफ और पखावज जान। नार तंबूरा बीन है बहुरि चाब बखान २६ फूंक नफीरी बांसुरी सरनाई करनाय। नाल खंजरी झांझ सब बाजे दियें बजाय २७॥

अथ गान आसन

बैठे आसन ऊंट को तब होय शुद्ध अलाप
चलते लेटे सुर भरै मानौं महा कलाप २८

अथ भैरों स्वरूप बर्णन

भैरों शिव छबि शिर जटा स्वेत बसन त्रि नैन। मुण्डन की माला गले सिद्ध रूप सुख दैन २९॥ सवैया॥ शिव मूरत भैरों के भाव बन्यों त्रि नेतर मुण्ड की माल गले। पट स्वेत सबै तन में पहरे हृदये भगवान को ध्यान धरे॥ त्रिसूल बिराजत है कर में सब भामिन को मन लेत हरे॥ तनछार लगे दुतिदूनि भई चित चाहन में जिय जात छरे॥३०॥

अथ रागिनी स्वरूप बर्णन

शिव पूजत कैलाश पर दोउ कर में ताल। स्वेत चीर अंगिया अरुन रूप भैरवी बाल ३१ भस्म पिटारी कर गहे हाथ लिये त्रिसूल। बंगाली ब्याकुल भई गई सबै सुध भूल ३२ बरी फूल दुपहरिया कर कंकन श्रृंगार॥ शीसकेस सोहन छुटे स्वेत बसन बरार ३३ कंकन नैन लोचन कमल नागरि महा अनूप पिय पै बैठी हंसत है मधुमाधवी यह रूप ३४ पुहुप बदन कानन धरे पहिरे बस्त्र लाल। क्रोधवन्त त्रिसूल कर लिये।

...कामवन्तादिनरैन ४१कोकिल...॥

...गे पियकेसंग। रतिमाने कैछीन तन अंगअंग में रंग॥

अथ हिंडोल स्वरूप बर्णन

...त बसन हिंडोलकेहै जो हिंडोर मांहि। सखी झुलावत

...गाय गाय मुसकाहि ४३॥ सवैया॥ कीन्ह बनाव महा

...न्दर भावत बैठ्यो हिंडोलहि डोले॥ झूक झुलावत जो

...सब गावत हैं सखियां मुख खोले॥ गोरे सो गात दिखात

...नो दामिनि नी दुति देखत सोले बस्तर पीत ... रसे

...न ...से सोहैं हसे मृदु बोले ४४॥

अथ रागिनी स्वरूप बर्णन

...कली नीले बसन कंचन सी सब देह। पिक बानी गाव

...बढ़ी पियके प्रेम सनेह ४५ बिरह भरी पटमंजरी मन न

...ननछीन॥ सखी सो रख प्रानदेत है भई प्रेम आधीन ४६

भैरों सरद कौशिक सिसिर और हिंडोल बसन्त दीपक ग्रीषम हैम श्री मेघ सुपावस अंत ॥ २४ ॥

अथ बाजे बरनन

जग में सब सुरना कहें बाजे साढ़े तीन ॥ खाल नार अरु फूंक पु निअद्धु ताल सुर हीन २५ खाल नगारो ढोल डफ और पखाव ज जान। नार तंबूरा बीन है बहुरि बाब बखान २६ फूंक नफी री बांसुरी सरनाई करनाय। ताल खंजरी झांझ सब बाजे दियें बजाय २७ ॥ अथ गान आसन

बैठे आसन ऊंट का तब होय शुद्ध अलाप

चलते लेटे सुर भरै मानौं महा कलाप २८

अथ भैरौं स्वरूप बरनन

भैरों शिव छबि शिर जटा स्वेत बसन तिर नैन। मुराडन की मा ला गले सिद्ध रूप सुख दैन २९ ॥ सवैया ॥ शिव मूरत भैरों के भाव बन्यों तिर नेतर मुराड ... ... गरे ... स्वेत सबै तन

अथ मेघ राग स्वरूप बर...

श्याम बरन जो मेघ है गहे हाथ तरवार ॥ अति आतुर भा खरी गावत सुरत बिचार ५२ ॥ सवैया ॥ मेघ मलार ...

...ति सुन्दर इन्द्र की छबि आप बन्यों है। पहरे पट श्यामो ... तरवार जो माल गरे इहि भांति ... ... अंग सो तो सिय भांति में आप धन्यों है काम को आतुर ही सि य कीरति की चित चाव बन्यो है ॥ ५३ ॥

इति श्री सभाबिलास समाप्तः